शैव प्रमोद अर्थात्—
शिव भजन माला।
* द्वितीय भाग *
रचइता—पं० चन्द्रशेखर शुक्ल।

ॐ

शैव प्रमोद अर्थात्—

शिव भजन माला।

द्वितीय भाग।

रचइता और प्रकाशक—

पं० चन्द्रशेखर शुक्ल,

गणेशगंज मिर्जापुर।

पुस्तक मिलने का पता—

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर,

राजादरवाजा बनारस सिटी।

मुद्रक—

श्री बिश्वेश्वर प्रेस,

बुलानाला काशी।

❀ श्री हरिः ❀

* शैव प्रमोद *

अर्थात्—

शिव भजन माला

द्वितीय भाग।

जाग्रत कहै को जासु कल्पना न कीन्ही स्वप्न,
सोई भलि भाँति रस नवल चिखाय है।
शीत अरु उष्ण दुःख सुख औ वियोग योग,
हानि हित लाभ मध्य समता सिखाय है॥
तन धन धाम प्रिय परिजन ग्राम केरि,
अबस अवश्य अनुरक्तिहिं झिखाय है।
या विधि सुनो हो 'चन्द्रशेखर' तिहारी यह,
विपति विशेष अनुकूलता दिखाय है॥

रचइता—

चन्द्रशेखर शुक्ल।

सम्बत्—१९९४ वि.

संक्षिप्त बक्तव्य।

सम्माननीय–सज्ज्नों–

दुर्भाग्य वश–इस 'शैव प्रमोद' के प्रथम भाग द्वितीय संस्करण में दी हुई मेरी 'प्रार्थना' को प्रकाशक महोदय श्रीयुत गौरीशङ्कर जी गनेड़ीवाला ने हटाकर उसके स्थान में अपनी अनावश्यकीय प्रार्थना, घुसेड़दी जिसके कारण–उसमें प्रकट किये गये मेरे मनोभाव मुझमें ही प्रविष्ट हो–पड़े हुए सड़गये–हरइच्छा–

अब इस द्वितीय भाग के प्रकाशन काल में–उसकी छाया एवं अन्य नवीन भावों को लेकर आप लोगों की सेवा में उपस्थित करता हूँ–शपथ-पूर्वक कहने में भी कोई संकोच नहीं–कि मैं एक अनपढ़ व्यक्ति केवल भगवद्गुणानुवाद समझ कर ऐसे कार्य को जिसे आदरणीय–कविजन किया करते हैं–करने का दुस्साहस किया–भलेही इसकी सर्वसाधारण के लिए आवश्यकता न रही हो

फिरभी मेरे मनोरंजन के लिए–इन सभी धुनों में श्रीशंकर यश गाने को मिलता नहीं था, अतएव इसकी नितान्त आवश्यकता थी। यह भी हो सकता है कि सर्वसाधारण में भी जो मेरे समान रुचि वाले हों उनके काम का भी मसाला यह हो-ऐसा समझकर संसार के सामने रखने का भी साहस कर डाला गया। त्रुटियाँ इसमें अनुमान से भी अधिक हो सकती हैं–क्योंकि मुझे छन्द या राग के नाम मात्रा इत्यादि को कौन कहे, शब्दों के स्त्री लिङ्ग पुल्लिङ्ग होनेका भी कुछ ज्ञान नहीं, यह अक्षरशः सत्य है। शब्द भी मैंने हिन्दी या प्रचलित के अतिरिक्त उर्दू फारसी तक, जहाँ जो पाये, देडाले हैं क्योंकि मुझ अनारी के पास इतना बड़ा हिन्दी शब्द कोष कहाँ, कि मैं अपनी आवश्यकताओं को उससे पूरी करूँ। संसार शायद विश्वास न करे–इसलिए लिखते हुए थोड़ा संकोच होता है (फिरभी ऊपर जो

शपथ शब्द दिया गया है उसके भी कुछ माने हैं) कि जिस वज्र मूर्ख को बोलने तक की तमीज़ नहीं उसके द्वारा (त्रुटि संयुक्त ही सही) यह रचना कैसी, मैं इसे पूर्णतः भगवत् प्रसाद ही मानता हूँ। भगवद्‌गुणानुवाद, हीन—अधिक मात्रा एवं अन्यान्य अशुद्धियाँ होने परभी, गाया जा सकता है। और 'उसमें दोषापत्ति नहीं' यह प्राचीन महापुरुषों ने कह रक्खा है' इस आधार ने, संसार के सामने रखते हुए, पीठ पर हाथ फेर दिया; अस्तु निःसंकोच होकर रखदिया गया। अब अंतिम निवेदन यह है कि, यदि कोई विचारवान व्यक्ति इसके भजन इत्यादि को गाना चाहें और उसकी त्रुटि उन्हें खटकती हो तो उसे अपने लिए सुधार कर गाने का, मेरे तरफ से, उन्हें सर्वाधिकार प्राप्त है, किन्तु मूल ग्रन्थ में उलट फेर करनेकी मेरी सम्मति इस कारण नहीं है, जो कि वैसा करने से, मेरी मूर्खता का प्रमाण खो जाता है।

भ्रम निवारण के लिए यह लिख देना भी आवश्यकीय प्रतीत होता है कि इसमें कोई भी भजन संग्रहीत नहीं है, जहाँ तहाँ जो भिन्न भिन्न नाम दिये गये हैं वे अपने कुटुम्ब एवं मित्र मंडल के स्मारक हैं।

पता–गणेश गंज
मिरजापुर। } विनीत
चन्द्रशेखर शुक्ल।

❀ श्री हरिः ❀

(श्री पं० चन्द्रशेखर जी शुक्ल में यथा नाम तथा गुण हैं, वे नाम के ही शुक्ल नहीं सचमुच शुक्ल हैं, बाहिर से ही नहीं, भीतर से भी और भगवान भूतनाथ भवानीपति चन्द्रशेखर के ही उपासक हैं) इस पुस्तक में उन्होंने अपने हृदय का भाव अपने इष्ट के सन्मुख प्रगट किया है। ये कौन से राग में हैं सो तो राग-रस-मर्मज्ञ संगीतज्ञ ही जानें, हम तो इतना ही जानते हैं कि "राग वही जामें राम विराजत" सचमुच इन रागों में भगवान चन्द्रशेखर विराजते हैं। अतः हमारी दृष्टि में तो ये राग ही हैं। शुक्ल जी को जो कहना था वह उन्होंने अपने वक्तव्य में कह दिया। अब पाठक और अधिक कुछ जानना चाहें तो भक्ति भाव के सहित इन पद्यों को पढ़ जायँ और भगवान ने उन्हें संगीत के संस्कार दिये हों तो इन्हें गाकर अपना लोक, परलोक दोनों सुधारें। शिवजी के

बारे में जो कहा जाय वही थोड़ा है और जो कहा जाय वही बहुत है । थोड़ा तो इसलिए कि "लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं, तदपि तव गुणानामीश पारं न याति" और बहुत इसलिए कि वे आशुतोष हैं, स्तुति प्रार्थना की भी जरूरत नहीं । तनिक होट लटकाकर गाल बजा दिये, एक आक फूल जिसे कोई देवता पसन्द न करे और एक चुल्लू पानी चढ़ा दिया, बस प्रसन्न हो गये । फिर एक पद को सुनकर वे प्रसन्न न हों यह तो असम्भव है । अतः अन्त में उन चन्द्रशेखर को प्रणाम करके मैं इस अपनी वेसुरी बातको समाप्त करता हूँ ॥

त्वत् तत्वं न जानामि कीदृशोऽसिमहेश्वरः ।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमोनमः ॥

अखंड-नाम संकीर्तन यज्ञ
गोरखपुर-
ज्येष्ठ की पूर्णिमा १९९४

शिवसेवकों के चरणधूरिका इच्छुक
प्रभुदत्त ब्रह्मचारी

❁ श्रीगणेशाय नमः

* शैव प्रमोद *

अर्थात्–

शिव भजन माला

द्वितीय भाग ।

❁ मङ्गला चरणम् ❁

❁ ग़ज़ल ❁

मंगल स्वरूप शम्भु को ध्याना यही मंगल ।
सर्वस्व त्यागि शरण में जाना यही मंगल ॥
होवें कदापि भूलेहु भव से विमुख नहीं ।
उर में विशेष व्रत जो कि ठाना यही मंगल ॥
हर हाल में हरषित हिये हर दम हमेश ही ।
हर नाम के सुमिरन में लौ लाना यही मंगल ॥
भूषित विभूति भाल अक्ष माल कंठ में ।
शाश्वत सुहावनीय शुभ बाना यही मंगल ॥
चाहें जिसे सुरवर्य हु पावें सुकृति कोई ।
पञ्चत्व काशि धाम में पाना यही मंगल ॥

चर वो अचर सब जीव में व्यापक है ईश एक।
दृग दोष से देखें नहीं नाना यही मंगल॥
मंगल हो 'चन्द्रशेखर' दुहुँ लोक जासुते।
हरि हर गुणानुवाद को गाना यही मंगल॥ १॥

❀ ग़ज़ल ❀

दानी दयाल होके दया भीख दीजिए।
मेरे से दीन पर कृपा की कोर कीजिए॥
भूखा भिखारि प्रेम का करबद्ध जाँचता।
करिये यों वृष्टि नेह की नखशिख ज्यों भींजिए॥
आवे उमड़ अगाध पयोनिधि त्यों प्रीति का।
अबिलम्ब स्वावलम्ब हो बेसुध बहीजिए॥
प्रगटे पियूष पावन पराभक्ति आपकी।
पुलकाय मान होय के पुनि पुनि सो पीजिए॥
विस्मृत हो 'चन्द्रशेखर' मुझको स्वकर्म सब।
तूही तू याद रह बस जब लौं कि जीजिए॥२॥

❀ ग़ज़ल ❀

शंकर निशंक होके तेरे दर पे खड़े हैं।

विख्यात विश्ववन्द्य सब देवों में बड़े हैं ॥
विस्तृत विशुद्ध भूरि विरद वाक्य आपके ।
स्वर्णाक्षरों में शास्त्र पृष्ठ माहिं जड़े हैं ॥
कैसे हैं क्या हैं आप कौन जान सके हैं ।
भासे है उसे लेश शरण में जो पड़े हैं ॥
पाने के आपको नियम यद्यपि सुगम सभी ॥
तद्यपि विमुख नरों को सो अत्यन्त कड़े हैं ॥
आकुल हो 'चन्द्रशेखर' कब से पुकारते ।
आते न दिखाते कहाँ किस ओर अड़े हैं ॥३॥

❀ ग़ज़ल ❀

कहिए तो कब तलक से यों तरसाइयेगा आप ।
मुझ पै न दया दृष्टि को दरसाइयेगा आप ॥
अघ-खान जान कर हमें कहिये न कब तलक ।
पावन पदारविन्द को परसाइयेगा आप ॥
जलता हूँ विषम ज्वाल से कब तक न हे विभो ।
मुझपर विराग वारि को बरसाइयेगा आप ॥
मेरे विशेष बज्र हृदय में न कब तलक ।

स्वामिन् सरस सनेह को सरसाइयेगा आप ॥
करके हे 'शंभुनाथ' त्यों स्वीकृत चरण शरण ।
कब तक न हर हमेश को हरषाइयेगा आप ॥ ४ ॥

❀ ग़ज़ल ❀

हमको सुनो पुरारी आश्चर्य यही है ।
हुई क्यों कृपा तुम्हारी आश्चर्य यही है ॥
आरत ज्यों आतुर हो कभी मैंने न पुकारा ।
मुझपै क्यों दृष्टि डारी आश्चर्य यही है ॥
जप तप नहीं व्रत ही किया मैंने यथार्थतः ।
अघ ओघ क्यों विदारी आश्चर्य यही है ॥
सपनेहु न साधन किये मैंने कभी ऐसे ।
क्यों भक्त नाम धारी आश्चर्य यही है ॥
नत शीश हो विनीत न साञ्जलि कभी जाँचा ।
दी क्यों विभूति सारी आश्चर्य यही है ॥
एकांत सुख आसीन हो मैं स्वस्थ न ध्याया ।
उर ज्योति क्यों पसारी आश्चर्य यही है ॥
कीन्हों त्यों 'चन्द्रशेखर' नहिं आत्म समर्पण ।

बिगरी बनी हमारी आश्चर्य यही है ॥ ५ ॥

❀ ग़ज़ल ❀

वर दीजिए दो चार जो प्रसन्न हूजिए।
माँगू हूँ मैं सरकार जो प्रसन्न हूजिए॥
तजि आन सब पाषाण रुद्र अक्ष मूर्ति त्यों।
बस हो मेरा शृंगार जो प्रसन्न हूजिए॥
शिव भक्त गृह शिव क्षेत्र शिव मंदिर सिवान में।
मारा फिरूँ बाजार जो प्रसन्न हूजिए॥
निष्काम क्रीत दास ज्यों सेवक तुम्हार हो।
ठुकरादूँ सब आधार जो प्रसन्न हूजिए॥
करते हुए गुणगान वो सुनते सुयश सदा।
दृग से बहे जलधार जो प्रसन्न हूजिए॥
चर वो अचर सब जीव को तव रूप मानिके।
हर से करूँ मैं प्यार जो प्रसन्न हूजिए॥
सुमिरन सुनाम आपका सन्तत सहर्ष त्यों।
होता रहे एकतार जो प्रसन्न हूजिए॥
होवें विमुख हरगिज़ नहीं चरणारविन्द से।

आवै विपति हजार जो प्रसन्न हूजिए ॥
टुक और 'चन्द्रशेखर' करिये जु युक्ति यों ।
दाखिल रहूँ दरबार जो प्रसन्न हूजिए ॥ ६ ॥

❋ ग़ज़ल ❋

कौलों से मेरा टरना क्या भूल जावोगे ॥
आज्ञा अवहेल करना क्या भूल जावोगे ॥
देही ये दिव्य पायके साधक सुलोक की ।
कर्तव्य का बिसरना क्या भूल जावोगे ॥
हठि तोरि शास्त्र पाश को अंकुश विहीन हो ।
गज मत्त ज्यों विचरना क्या भूल जावोगे ॥
शुभ श्रेयकर सुकृत को बरबस बिहाय कर ।
अघ से घड़ों का भरना क्या भूल जावोगे ॥
विषयोपभोग के बुरे मद से मदान्ध हो ।
त्रय ताप ज्वाल जरना क्या भूल जावोगे ॥
सत्ता तेरी भुला अहम् कर्ता यों मानिकै ।
भव निधि में जाय परना क्या भूल जावोगे ॥
मेरे ये 'चन्द्रशेखर' अनगिन्त दोष को ।

गनि गनि कै जोरि धरना क्या भूल जावोगे।।७।।

❀ ग़ज़ल ❀

हमपर कृपा तुम्हारी रहता अपार भोला।
कारण उसी के हर दम रहता है मस्त चोला ॥
उन्मत्तवत् या जड़वत् फिरता हूँ मैं अकेला।
होकर प्रमत्त छाने अनुराग भंग गोला ॥
भाषण करे न कोई ना जानें किस वजह से।
मैं भी जो कोई मुझसे बोला उसी से बोला ॥
यह दृष्य विश्व भर के देखूँ दिली के अन्दर।
जब से तू विश्व कर्त्ता हिय के कपाट खोला ॥
तेरे प्रसाद का जो आनन्द 'चन्द्रशेखर'।
स्वर्गापवर्ग का सुख तुलता न उससे तोला ॥ ८ ॥

❀ ग़ज़ल ❀

सब देवों से सच सौ गुनी शङ्कर की शान है।
इसही लिये उस देव को कहते महान हैं ॥
चीरोधि को मथते समय रत्नों को लात मार।
स्वयमेव हलाहल किया हित विश्व पान है ॥

दातृत्त्व का वर्णन भला सक्ता है कौन कर ।
गुण दोष से भिक्षुक बने यह दृढ़ प्रमान है ॥
निज भक्त का रक्षक कोई उनसा क्या और है ।
सत शास्त्र खोल देख लो जिसमें बयान है ॥
किसकी जबाँ में ताकत जो 'चन्द्रमौलि' के ।
विस्तार से कुल करसके कीरति का गान है॥ ६॥

❁ ग़ज़ल ❁

हमको हमेशः एक बस हर का हि ध्यान है ।
उनके सिवा इस विश्व में दिखता न आन है ॥
जपता हुँ उनका ही मुझे भाता भि वही है ।
भोला भलासा नाम जो जाहिर जहान है ॥
लीला ललित उनकी निरख होता हुँ मग्न मैं ।
त्रयलोक्य का अधिपति करे वास श्मशान है ॥
जिसके दिये सम्रद्धि को सब देव भोगते ।
उसके लिये क्या हद नहीं भिक्षा विधान है ॥
जो सृष्टि का कर्ता स्वयं भर्ता व संहर्ता ।
सो नग्न हो नाचे न क्या अद्भुत ए तान है ॥

उसके भरोसे हम सदा हो मस्त घूमते।
वह ही हमारी मुश्किलें करता आसान है॥
जाचक मैं 'चन्द्रशेखर' उसके हि द्वार का।
देता दयाकर नेह का वह दिव्य दान है॥ १०॥

❋ ग़ज़ल ❋

तजि के चरण तुम्हारा जाना कहीं नहीं है।
मनहूश मुझसे का ठीकाना कहीं नहीं है॥
खोजूँ किसे कहाँ अब जाहिर जहान में तो।
तुझ सा दयाल दाता दाना कहीं नहीं है॥
जाचूँ किसे किसी से क्यों कर जुबान खोलूँ।
तेरे प्रसाद सा वर पाना कहीं नहीं है॥
वाराणसी विहाकर भटकूँ भला क्यों, मुझको।
सुर नाग लोक में भी भाना कहीं नहीं है॥
बहु आडंबर बढ़ा कर बरबस क्यों बेष बदलूँ।
श्रुति युक्त शुद्ध सुन्दर बाना कहीं नहीं है॥
गानों को अन्य गा क्यों नाहक गला पिराऊँ।
गुणगन सा तेरे शङ्कर गाना कहीं नहीं है॥

केहि द्वैत दृष्टि देखूँ कहिये तो 'चन्द्रशेखर'।
व्यापक तू विश्व एकी नाना कहीं नहीं है ॥११॥

❋ ग़ज़ल ❋

ईश्वर तुही बचाना अजेयाभिमान सेती।
कुल के कुज्ञान सेती गुरु के गुमान सेती॥
सुधि बुधि रहे न जिसके लगते हि तन वतन की।
कामिनि कटाक्ष के उस करकस कमान सेती॥
इह लोक परहु नाशक लंपट ए लोभ के सह।
उस कोह मोह मत्सर ममता महान सेती॥
जर मूल नाश होवे त्राता न कोपि जिससे।
गुरु विप्र सन्त के उस घोरापमान सेती॥
जितने हों और ऐसे अपराध 'चन्द्रशेखर'।
होवें न भूलकर भी मुझ इस नादान सेती ॥१२॥

❋ ग़ज़ल ❋

कलियुग में शंभु नाम ही तारन उपाय है।
अवलम्ब नाहिं दूसरा मुझको दिखाय है॥
एहि काल कर्म में नहीं वह शक्ति बन्धुवर्य।

खेकर जो नाव तेरी पार उस लगाय है ॥
यों योग का वह जोर घोर हाय हट गया ।
निस्तत्त्व सोउ कैसे काम तेरे आय है ॥
बैठे भरोसे ज्ञान के गाफिल जो होय कर ।
परिणाम में ध्रुव मानले—धोखा सो खाय है ॥
कहता न 'चन्द्रशेखर' मन की गढ़न्त यह ।
सत शास्त्र सत समाज सब सन्तों कि राय है॥१३॥

❀ ग़ज़ल ❀

न कोई आन जग मेरा भरोसा साम्ब शिव तेरा ।
गहो कर जानि निज चेरा भरोसा साम्ब शिव तेरा ॥
पड़ा मझधार में बेरा सहायक कोउ न एहि बेरा ।
लगावे तून अब बेरा भरोसा साम्ब शिव तेरा ॥
चहुँ दिशि घोर तम घेरा न सूझे पार जेहि केरा ।
न दीखे दूसरा नेरा भरोसा साम्ब शिव तेरा ॥
कोह मद मोह खल खेरा करें जल जन्तु गन जेरा ।
तपे त्रय ताप बहु तेरा भरोसा साम्ब शिव तेरा ॥
हहरि हरओर हग फेरा हितू हर भाँति तोहिं हेरा ।

शरण शिव 'सुन्दरी' टेरा, भरोसा साम्ब शिव तेरा। १४॥

❋ ग़ज़ल ❋

हमें आनन्द देते हैं हमारे हर हमेशा से।
उन्हीं के हम तो रहते हैं सहारे हर हमेशा से॥
मुनासिब क्या हमें अब भी भरोसा औरका करना।
सकल विधि शंभु हैं जबकी सम्हारे हर हमेशा से॥
फिकर क्योंकर करें किञ्चित् कहो कोई से कामों की।
बिना श्रम सोई हैं सबही सँवारे हर हमेशा से॥
न तीरथ ब्रत न जप तपही किया हमसे सफरता है।
अखिल अघ जन्म जन्मों के निवारे हर हमेशा से॥
यकीनन सो रहेगी है मुझे परतीति शशि शेखर।
मेरी जो हाथमें पति है तुम्हारे हर हमेशा से॥ १५॥

❋ ग़ज़ल ❋

दयामय हे कृपा सागर दया करना दया करना।
पड़ा हूँ द्वार पर आकर दया करना दया करना॥
सम्हाला होश है जबसे न जाना और समरथ को।
कहूँ फिर कौन से जाकर दया करना दया करना॥

भरोसा आपका औ आसरा बस आपही का है ।
हूँ कहता फिर गरज गाकर दया करना दया करना ॥
भरी आशा हिये में है विमुख होवें न हर हरगिज ।
सु दाता आपसा पाकर दया करना दया करना ॥
विनत नत शीश कर जोरे यही है माँगता 'शंकर' ।
बनालो मोल बिन चाकर दया करना दया करना ॥ १६ ॥

❋ ग़ज़ल ❋

भजो मन प्रेम सह बसुयाम सीताराम सीताराम ।
तजो दुख दोषमय सब काम सीताराम सीताराम ॥
उठो बैठो चलो खाओ पियो कुछ भी करो या कि ।
न भूलो जी सुबह या शाम सीताराम सीताराम ॥
महीना वर्ष दिन घटि पल जो बीता यार सो बीता ।
न दो आलस्य को अब ठाम सीताराम सीताराम ॥
अजी कलिकाल में दूजी क्रिया कोइ सध नहीं सकती ।
जपो सुख सिद्धिकर यह नाम सीताराम सीताराम ॥
वचन मन कर्म 'शिवमोहन' शरण सानन्द हो जावो ।
अगर हो चाहते अभिराम सीताराम सीताराम ॥ १७ ॥

❁ ग़ज़ल ❁

साम्बशिव शिवसाम्ब शठ कहता नहीं ।
साम्बशिव के हो शरण रहता नहीं ॥
जन्म जन्मों के किये अपकृत निजी ।
साम्बशिव स्मरिकै समुद दहता नहीं ॥
चाहि कै विषयनि विविध बेचैन है ।
साम्बशिव भजि चैन चित चहता नहीं ॥
तापत्रय करिकै सु-तापित है महान ।
साम्बशिव जपि शांति सुख लहता नहीं ॥
दास दासों का हो 'भोला स्वर्णकार' ।
साम्बशिव तव चरण मृदु गहता नहीं ॥१८॥

❁ ग़ज़ल ❁

आशुतोष दयाल शंकर नाम है ।
दीन जन पालन सहज शुभ काम है ॥
शुचि रजत गिरि शृंग बट बृक्षावली ।
तर मनोरम आपका प्रभु धाम है ॥
दिव्य गौर न और जैसा है कोई ।

देव ऐसा रूप तव अभिराम है ॥
कौन समरथ है जो कह सकता भला ।
जोकि जैसा आपका गुणग्राम है ॥
'रामदास सुनार' तेरा दास जो ।
धर धरणि में शीश करत प्रणाम है ॥१६॥

❁ ग़ज़ल ❁

जो सतत कहता है सीताराम नाम ।
सो समुद रहता है सीताराम नाम ॥
जन्म जन्मों के किये अघ-तूल को ।
वह्नि हो दहता है सीताराम नाम ॥
तरु बहुत कालनि विषमय वासना ।
मूल सह ढहता है सीताराम नाम ॥
लोक सुख परलोक गति गत हस्त है ।
यदि शरण गहता है सीताराम नाम ॥
निशि अह-बिसरे न, मुख निसरे सदा ।
शुक्र यह चहता है सीताराम नाम ॥ २० ॥

❀ ग़ज़ल ❀

कोई मोहिं ईश दयाभीख दिला देवोगे।
तृषित को नेक प्रेम वारि पिला देवोगे॥
मोह हिम पाय जो सकुचा है--ज्ञान सूरज का।
प्रगटि परकाश हृदय कंज खिला देवोगे।
विषय विष पान किये मन मेरा मुरदार हुआ॥
विरंचि वैराग्य सुधा सींचि जिला देवोगे।
जन्म जन्मों से जबरदस्त जमा जो उर में।
वासना वृक्ष का वह मूल हिला देवोगे॥
जासु मिलने कि भरी चाह 'चन्द्रशेखर' के।
सपदि सोइ भाँति किसी, मीत मिला देवोगे॥२१॥

❀ ग़ज़ल ❀

पावनी कीर्ति निजी नाथ तुम भूले तो नहीं।
पातकी मैं हूँ परम बात तुम भूले तो नहीं॥
तू क्षमाशील पिता सृष्टि का शंकर स्वामी।
मैं तेरा पुत्र कुटिल नात तुम भूले तो नहीं॥
तू दयासिन्धु कृपासिन्धु है करुणा सिन्धो।

शत्रु षट से हुँ मैं आघात तुम भूले तो नहीं ॥
किस्मे वह शक्ति सके जो सम्हाल हर मुझको ।
आप पर ही मेरा सर्वान्त तुम भूले तो नहीं ॥
अन्य गति हीन वो मति हीन 'चन्द्रशेखर' का ।
त्राण कर्ता न है दरसात तुम भूले तो नहीं ॥२२॥

❋ ग़ज़ल ❋

दयाकर दिव्य दरश अब तो दिखाना प्यारे ।
झखे बहु कल्प नहीं अब तो झिखाना प्यारे ॥
विषय रस पान करत बीत जन्म बहुतेरा ॥
नेक नव नेह सुरस अबतो चिखाना प्यारे ॥
कपट छल छिद्र सयानप है सिखा सब दिन से ।
शुद्ध समभाव सबक अबतो सिखाना प्यारे ॥
प्रचुर इन पामरों की चाकरी किया मैंने ।
नाम निज-दासन में अबतो लिखाना प्यारे ॥
भूरि पर नारियों को ध्याय चुके 'शशिशेखर' ।
मूर्ति मनहारि हिये अबतो टिकाना प्यारे ॥ २३ ॥

❁ ग़ज़ल ❁

शंभु गुणगान करो यार हमारे मानो ।
हिये हर ध्यान धरो यार हमारे मानो ॥
सभी मरते हैं तुम्हें भी अजी मरना होगा ।
तो कुछ कर के मरो यार हमारे मानो ॥
वही कर्तव्य है करते जो बड़े हैं आये ।
बुरे कर्मों से टरो यार हमारे मानो ॥
हों जो प्रभु भक्त मिलो मित्र तुम दिल को खोले ।
देख दुर्जन को डरो यार हमारे मानो ॥
काम औ क्रोध लोभ मोह हैं बैरी तुम्हरे ।
होके बेदर्द दरो यार हमारे मानो ॥
विप्र गुरु देव पिता पूज्य श्री माता जी के ।
नित्यशः पैर परो यार हमारे मानो ॥
मंजु मुदिता वो मजे की जो मयत्री करुणा ।
दया दिल बीच भरो यार हमारे मानो ॥
ताप तीनों से हो मुद्दत से तुम जलते आये ॥
अहो अबतो न जरो यार हमारे मानो ।

योंहि होकर के शरण आप 'चन्द्रशेखर' के।
बात बातों में तरो यार हमारे मानो॥ २४॥

❋ ग़ज़ल ❋

मीत मन होकर मगन कब ईश गुणगन गायेगा।
सच बता सु सनेह शिवपद कंज कब सरसायेगा॥
प्रिय प्रवीण अधीन करि निज इन्द्रियाँ छलहीन त्यों।
कहु कबै रसलीन ह्वै तेहि नाम रट लौ लायगा॥
धन तनय तन को तनक में मोह तृण ज्यों तोरिकै।
जोरि कै बरजोरि ममता हर सों कब हरषायगा॥
विष विशेष विचारि विषयनि सों विमुख होकर सखे।
सद्य कहु पराभक्ति को कब मद्य पी मस्तायगा॥
'चन्द्रशेखर' जाउँ बलि बतराउ कबहिं परत्र की।
चिन्तवन में तासु के सुधि बुधि सबै बिसरायगा॥ २५॥

❋ ग़ज़ल ❋

हर्षिहिय हरगुण सदा गाते हैं हम गाते हैं हम।
पूर्ण परमानन्द नित पाते हैं हम पाते हैं हम॥
हो जहाँ हर यश कथामृत वर्षिणी सुख दायनी।

पान करने के लिये जाते हैं हम जाते हैं हम ॥
खुश्क तर जैसाभि जो लाकर धरा हर सामने ।
शीश नाकर के उसे खाते हैं हम खाते हैं हम ॥
इन छनिक धन के धनिक का कुल बड़प्पन बादकर।
हर विभव को ही हिये छाते हैं हम छाते हैं हम ॥
चर अचर कोई किसी भी योनि या किसी वेष हो ।
मान कर हर रूप शिर नाते हैं हम नाते हैं हम ॥
दिव्य वर बाँकी बनी झाँकी जहाँ मन भावनी ।
हर दरस की लालसा धाते हैं हम धाते हैं हम ॥
'चन्द्रशेखर' है फिकर नहिं लोक औ परलोक की ।
नेह हर नीकी सुरा माते हैं हम माते हैं हम ॥२६॥

❀ ग़ज़ल ❀

आह मन मेरे मुझे है शोक बस इस बात का ।
जो तुझे होता नहीं कुछ ख्याल जमके लात का ॥
रोज ही मरते हैं कितने है तुझे मरना भि ठीक ।
फिर भी कितना मोह तुझको है ए गुजरे गात का ॥
धन पराया हड़पना बद आदतें तेरी बनी ॥

हा बुरा चिन्तन तेरा पर नारियों से घात का ॥
इस तरह कितने घुसे हैं ऐब तेरी देह में ।
बुद्धि में बेड़ा पड़ा साढ़े शनीचर[१] सात का ॥
लोग ए देखें न देखें क्या भला इसका शुमार ।
खौफ कर उसका जो लेखा लेयगा दिनरात का ॥
घट में वह सर्वज्ञ बन बैठा है हरएक व्यक्ति के ।
कौन सा अनजान उससे कर्म तेरी जात का ॥
हो शरण तू 'चन्द्रशेखर' के बचन मन काय से ।
फिर नहीं खटका कभी भी है तिहारे पात का ॥२७॥

❋ ग़ज़ल ❋

अब कहीं जाना नहीं है हर शरण जाने के बाद ।
शेष कुछ गाना नहीं है शिव सुयश गाने के बाद ॥
जप करें तप ब्रत करें कुछ भी करें या ना करें ।
श्रेय पर पाना नहीं है शंभु पद पाने के बाद ॥
मूरतें अतिशय मनोहर और की हों या न हों ।

१ जिस समय यह भजन बना है उस समय साढ़े सातीं शनिश्चर वर्तमान थे ।

पर हमे ध्याना नहीं है रूप मृड ध्याने के बाद ॥
नाम निर्मल हों निखिल रिधि सिद्धि दायक हु तोभी ।
मुख अपर आना नहीं है उग्र हर आने के बाद ॥
सुर सुरेश समर्थ शतशः हों भले सुर लोक में ।
इष्ट मन माना नहीं है ईश कहँ माने के बाद ॥
हो अखिल ब्रह्मांड नायक और ही चाहे कोई ।
गोर में लाना नहीं है भव विभव लाने के बाद ॥
'चन्द्रशेखर' सन्त जनके वेष बहुतक विस्तरे ।
धारना बाना नहीं है शैववर बाने के बाद ॥२८॥

❀ ग़ज़ल ❀

शंभु हो शिव हो शिवापति संत दीन शरण्य हो ।
देव हो दुख दोष नाशक सर्व देव अग्रगण्य हो ॥
भो महेश सुमीत मुररिपु मुनिजनादिक मन्य हो ।
ईश अविनाशी अजामर कोउ न तुम सम अन्य हो ॥
काम बैरि अकाम कामद काम निधि लावण्य हो ।
शूलधर शशिधर धराधर आभरण धर धन्य हो ॥
विज्ञ वर विज्ञान वारिधि विश्वपति ब्रह्मण्य हो ।

वेद विद वेदाधिपति विभु वेद विद्भ्यो भन्य हो ॥
दास पूरक आश आशुहिं त्रास हर भव जन्य हो।
'चन्द्रशेखर' चरण प्रति निज देहुभक्ति अनन्य हो॥२६॥

❋ ग़ज़ल ❋

कब मिटेगी हर हमारी बासना यह काम की।
त्यों लगेगी कब रटनि की लौ तिहारे नाम की ॥
क्रोध का कब ताप हा यह होयगा शीतल सुखद।
होयगी इति लोभ के कब धौं ए लंबे लाम की ॥
मोह का भव भूत सर पर से उतर कब जायगा।
दूर होगी कब नशा यह गर्वमय मयं जामं की ॥
मत्सरी पैशाच से भी मुक्त वो मुद युक्त हो।
आयेगी वह शुभ घरी कब शांति युत विश्राम की॥
'चन्द्रशेखर' चरण पंकज को निरन्तर ध्यावते।
कब नहीं होगी ख़बर हमको सुबह वो शाम की ॥३०॥

❋ ग़ज़ल ❋

पुण्य पथ पग धर पुनः डर कर अटकना भूल है ॥

१ शराब २ प्याला।

ले सहारा आपना उस्को झटकना भूल है ॥
वाह वाही करने वालों से सदा नफरत करो।
जो कहे कोरी खरी उससे चटकना भूल है ॥
मत मिलो मित्रो किसी से कुछ नहीं परवा मगर।
दोस्ती करके किसी से फिर खटकना भूल है ॥
चार हों बैठे जहाँ प्रिय वस्तु कोई पाय कर।
सब को बताये बिना स्वयमहि गटकना भूल है ॥
बोझ लो सर पर न कोई गर नहीं ले चलसको।
भार ले निज माथ बीचहि में पटकना भूल है ॥
भव सरित तरने को सुन्दर सेतु सी हरिभक्ति जो।
मोह बस बनि अंध उस पर से छटकना भूल है ॥
'चन्द्रशेखर' त्याग कर कर्तव्य निज हित चाह से।
साधु पीर फकीर ढिग सुहृदो भटकना भूल है ॥३१॥

❀ ग़ज़ल ❀

शंभु तुम्हरी दयालुता तुम्हें याद है कि न याद है।
हेतु बिनहिं कृपालुता तुम्हें याद है कि न याद है।

१ यह प्रायः बने हुये साधुओं के लिये इशारा है।

जीव मुझ पामर महा की अतिशयी अज्ञानता ।
आपकी सर्वज्ञता तुम्हे याद है कि न याद है ॥
कौल कर हर बार तुमसे आह वह हटना मेरा ।
आपकी दृढ़ प्रतिज्ञता तुम्हे याद है कि न याद है ॥
हो पतित करना मेरा भ्रम वश सदा दुष्कर्म का ।
आपकी सु पुनीतता तुम्हे याद है कि न याद है ॥
हूँ शरण मैं आपके कहना जो यह 'महाबीर' का ।
आपकी संरक्षता तुम्हे याद है कि न याद है ॥३२॥

❋ ग़ज़ल ❋

मेरे मन तुझे ईश ध्याना पड़ेगा ।
सदा उनके पद शीश नाना पड़ेगा ॥
यही एक यह देह मिलने की खूबी ।
समझ देव के गुण को गाना पड़ेगा ॥
धरे आन कर भोग जो उनके आगे ।
चढ़ा माथ उनको हि खाना पड़ेगा ॥
नहीं रौब औरों का कुछ दिलमें लाकर ।
उन्हीं का विभव उरमें छाना पड़ेगा ॥

भरोसा किसी का नहीं करके कुछ भी ।
उन्हीं के शरण तुझको जाना पड़ेगा ॥
भले या बुरे, छोड़ सब संगियों को ।
सुभक्तों के ही बीच आना पड़ेगा ॥
वहिर्मुख पड़ी वृत्ति तेरी अभी जो ।
उसे खींचकर अबतो लाना पड़ेगा ॥
मुरादों को ज्यों तृण सभी त्याग करके ।
प्रभो पाद पद्मों को पाना पड़ेगा ॥
किया चींचपड़ जो जरा 'चन्द्रशेखर' ।
तो मैदाने चौरासी धाना पड़ेगा ॥३३॥

❀ ग़ज़ल ❀

मेरे नाथ तुमको कहाना पड़ेगा ।
मेरी साध यह तो पुराना पड़ेगा ॥
मैं हूँ पुत्र तेरा पिता तुम हमारे ।
यही नात अबतो निभाना पड़ेगा ॥
हो गुमराह हम दर बदर हैं भटकते

मुझे मार्ग अपना बताना पड़ेगा ॥
बुरी अर्थ की ए गुलामी छुटाकर ।
मुझे दास अपना बनाना पड़ेगा ॥
जो होवें चरण से अलग हम कभी भी ।
तो फिर खींच करके लगाना पड़ेगा ॥
घुसे काम औ क्रोध अन्दर हैं इनको ।
दे वैराग्य डंडा भगाना पड़ेगा ॥
विषय विष किये पान मुर्दा हुआ मन ।
पिला प्रेम अमृत जिलाना पड़ेगा ॥
लगी आग है ताप तीनों की उर में ।
दया दृष्टि बरसा बुझाना पड़ेगा ॥
सिखा राग औ द्वेष अब तक है हमने ।
सबक शुद्ध समता सिखाना पड़ेगा ॥
पड़े आयकर हम शरण हैं तुम्हारे ।
मेरी लाज तुमको बचाना पड़ेगा ॥
तरसती हैं आँखें मेरी रामआधार ।
इन्हें अबतो दरसन दिखाना पड़ेगा ॥ ३४ ॥

❋ ग़ज़ल ❋

मेरे अपराध मेरे नाथ न जीमें लाना।
मेरे हृदयेश मुझे भूल न दिल से जाना॥
मेरे सर्वस्व मेरे प्राण हे मेरे स्वामी।
मेरे मानिन्द मेरी आश को न ठुकराना॥
मेरे दाता मेरे त्राता मेरे सुहृद भ्राता।
मेरे ज्ञाता है तुझी से मुझे गरज गाना॥
मेरे जीवन मेरे धन धान्य वो मेरे सब कुछ।
मेरे प्रिय पात्र किसी और को न मैं जाना॥
मेरे सुख साज महाराज हे मेरे शिरताज।
मेरे कुलपूज्य कोई और हैं नहीं नाना॥
मेरे कर्त्ता मेरे भर्त्ता मेरे सुन्दर हर्त्ता।
मेरे शिव सेब्य कहीं और न तुझसा पाना॥
'दास गोपाल' विवस हो न विसारे तुझको।
मेरी सुधि बुधि हो मुझे याद दिलाते आना॥३५॥

❋ ग़ज़ल ❋

मेरे मन मोह मद अब तज सदा शिव भज सदा शिव भज।

न रख दिल में जरा भी कज सदा शिवभज सदा शिवभज
इलाका धाम धन तेरा पड़ा बेकार यॉं होगा। न
जावे साथ में रथ गज सदा शिव भज सदा शिवभज॥
मिली जो देह मुश्किल से है फिर मिलना महा मुश्किल।
उसे सार्थक न करते लज सदा शिव भज सदा शिवभज
लड़कपन हो चुका बीती जवानी अब बुढ़ौती में।
नकारा कूच का बस बज सदा शिवभज सदा शिवभज॥
जरूरी बाँध ले सामान कर देरी न घटि पलकी।
विदेशी बेगि अब तू सज सदा शिवभज सदा शिवभज॥
न हो दृग भ्रम मिटे सब तम सुगम शुभ पंथ हो तेरा।
लगानें नैन गुरुपद रज सदा शिवभज सदा शिवभज॥
उसे तू सेव 'शशिशेखर, वचन मन कर्म दृढ़ करके।
जिसे हैं सेवते हरि अज सदाशिव भज सदा शिवभज ३६

❀ ग़ज़ल ❀

छिपे बैठे हो कहाँ दिल को लुभाने वाले।
दिखा दर्शन दे मेरे मन को चुराने वाले॥
यही है चाह मेरी आह न जाने कब की।

मिटा दे जल्द दिली दर्द मिटाने वाले ॥
रही जाती है जगह धीर की मनसे मेरे।
न कर देर मेरी आश पुराने वाले ॥
जगी जोरों से मिलन की मधुर ज्वाला उरमें ।
बुझा दे बेगि लगी आग बुझा ने वाले ॥
तड़पती मीन सी आँखें हैं मेरी 'शशिशेखर' ।
होजा प्रत्यक्ष हृदय कंज खिलाने वाले ॥३७॥

❀ ग़ज़ल ❀

अब तो हुये न आपके अनुकूल हम जनाब ।
या कि अभी भि जचते कुछ हैं गे कम जनाब ॥
जितनी रही बुराई समझी सुनी हुई ।
करते हुये न हमने खाया है खम जनाब ॥
लज्जा न लोक की कुछ परलोक का न डर ।
योहीं गिना न उनको जोकि हैं जम जनाब ॥
जो कुछ रही भलाई मुझमें बराय नाम ।
देदी उसे तिलाञ्जलि होकर बेगम जनाब ॥

१ अर्थात् आप पतित पावन हैं, आपके तारने योग्य पतित हम होगये न ?

कोइ भी वाकयात छिपी आपसे नहीं।
क्योंकि रहे हैं हरसू खुद आप रम जनाब ॥
होगी कसर जो कोई पूरी करेंगे वो।
गरचे रही जो मेरे दम में ये दम जनाब ॥
जिस जा हैं 'चन्द्रशेखर' अब भी विराजे आप।
देखें न छा रहा है कैसा ए तम जनाब ॥ ३८ ॥

❀ ग़ज़ल ❀

हर नाम भजा करना शिव नाम भजा करना।
हर रंग रँगे हरदम हर साज सजा करना ॥
हर प्रीतिवान जन से दृढ़ प्रीति मीत करके।
हर से विमुख नरों का तुम संग तजा करना ॥
कोई मरे जरे या कुछ भी रहे कि जाये।
सुमिरन में हर के होके तुम मस्त मजा करना ॥
विपरीत काल प्रेरित धीमान गर हँसें तो।
जड़ बुद्धि जान उनसे हरगिज न लजा करना ॥
यह टेक टेक लो तुम चित में ए 'चन्द्रशेखर'।
होकर के हरके रहना जब तक न कजा करना ॥ ३९ ॥

❀ ग़ज़ल ❀

राम तुमही मेरे नयन अभिराम हो ।
राम सर्वस्व तुम मोर मन काम हो ॥
राम पति राम गति तुमहिं मति राम हो ।
राम तुमही मेरे परम प्रिय नाम हो ॥
राम माता तुमहिं पिता तुम राम हो ।
राम भ्राता भले सुहृद निष्काम हो ॥
राम अंत तुमहिं बाह्य तुम राम हो ।
राम तुम विश्व महँ व्याप्त सब ठाम हो ॥
राम जीवन तुमहिं प्राण तुम राम हो ।
राम जग जीव के विशद विश्राम हो ॥
राम सत् राम चित आनँद हु राम हो ।
राम सुन्दर शिवहु सत्य सुखधाम हो ॥
राम मम लोक परलोक तुम राम हो ।
शरण जन 'हरि शरण' पाहि प्रभु राम हो॥४०॥

❀ कौवाली ❀

आवे मनमें हमारे विचार सखी ।

करू मैं व्रत प्रति सोमवार सखी ॥
शैर—अलीशि मास पुरुषोत्तम पुनीत आया है।
यथेच्छ रीति शंभु सेवना सुहाया है ॥
तूभी सम्मति यह उर धार सखी।
शैर—उठो खुब प्रात सखी वृन्द बुलाने को चलें।
सकल हो साथ फेर गंग नहाने को चलें ॥
संग में रहे पूजो पचार सखी ॥
शैर—विमल वर वारि देव-सरि नहाय के प्यारी।
होय शुचि शीघ्र शिवालय की करो तैयारी ॥
वहाँ बैठो वरासन डार सखी ॥
शैर—अर्घ औ पाद्य आचमन सविधी करवावो।
पंचामृत बहोरि दिब्य नीर नहलावो ॥
पुनि अंबर अर्पु सुधार सखी ॥
शैर—विविध गंध चंदनादि लगावो नीके।
मृदुल मंजु बिल्वपत्र चढ़ावो नीके ॥
शुभ सुरभित सुमन सँवार सखी ॥
शैर—द्रव्य दश युक्त धूप धूम करावो आली।

गव्य घृत दीपमाल साजि जरावो आली ॥
करो आरति उमगि अपार सखी ॥
शैर—षटरस व्यंजनानि आनि धरो हर आगे ।
दुग्ध दधि आदि अर्पिये विशेष अनुरागे ॥
होवें ऋतुफल अमित प्रकार सखी ॥
शैर—लवंग लाचि युक्त ताम्बूल अरपण कर ।
नृत्य गीतादि-फलहु शंभुहीं समरपण कर ॥
'शशिशेखर' होय उधार सखी ॥ ४१ ॥

❀ कौवाली ❀

बजरंग भरोसो तिहारो हमैं ।
टुक कै दृगकोर निहारो हमैं ॥
शैर—सम्हाला होश है जबसे हमारे हरि स्वामी ।
बना हूँ आपका आश्रय समेत अनुगामी ॥
तुमहूँ कस देव विसारो हमैं ॥
शैर—न जाना और जमाने में शक्ति शाली है ।
शरीर मेरी नाथ आपकी ही पाली है ।
अबतो निज दास विचारो हमैं ॥

शैर–मुझे भय शोक दुःख दोष सताते हरदम।
शैब कामादि रागरोष जताते हरदम॥
इनसे कपिनाथ उबारो हमैं॥

शैर–पाप औ ताप आपका सुमिरते ही हटते।
कृपा से आपके समूह क्लेश के कटते॥
तिन मध्य से क्यों न निकारो हमैं॥

शैर–देव ग्रह भूत पिशाचादि अन्य हैं जितने।
आपकी हाँक मानते हैं सभी वे तितने॥
सबसे सबभाँति सम्हारो हमैं॥

शैर–'शालग्राम' शुक्ल अर्ज यही करता है।
चरण में शीश आपके सदैव धरता है॥
गनि कै जन दीन सुधारो हमैं॥ ४२॥

❀ कौवाली ❀

तेरे रूप के हम मतवाले भोले डमरू बजाने वाले।
शुभ्र धवल भल गात गोराई, मन मोहक वरवदन लुनाई,
बहु रति पति छबि टाले॥ भोले डमरू बजाने वाले॥
पिङ्ग जटा बिच सुरसरि राजे, इन्दु भाल अतिशय

छवि छाजे, देखत दृग अरुझाले ॥ भोले० ॥
सब तन अतन विभूति रमाये, अहरह भंग को रंग जमाये, नैना हैं गजब गुलाले ॥ भोले० ॥
नागन को उपवीत सुहावे, मुंडमाल हिय हालत भावे, भूषण मणिधर काले ॥ भोले डमरू बजाने वाले ॥
कटि केहरि कर कृत्ति सँवारे, भूत प्रेत गन संग तिहारे, ढंग है अजब निराले ॥ भोले डमरू बजाने वाले ॥
दास 'द्वारका' चरण निहारे, नव विकसित अंबुज अरुणारे नख द्युति मोहनि डाले ॥ भोले० ॥४३॥

❀ कौवाली ❀

ते रे चरणन की बलिहारी, मेरी मात बिन्ध्य गिरिवारी ।
मध्य शैलतव मंदिर सोहै, देखत थल सब जन मन मोहै, सन्निधि सुरसरितारी ॥ मेरी मात० ॥
कनक रचित मणि जटित सिंहासन, बैठी अंब तेहि-पर पद्मासन, बहु रवि शशि द्युति टारी ॥ मेरी० ॥
गात बरन वर चंपक राजै, विविध वस्त्र भूषण छवि छाजै, रूप रतिहु मद हारी ॥ मेरी मात० ॥

अमर-बधू कर चमर डुलावैं, विष्णु विरंचि आदि शिर नावैं, करत स्तुति मुनि झारी ॥ मेरी० ॥ घहरत घंट बजत सहनाई, जै जै कर सुरनर समुदाई, सहचरि आरति धारी ॥ मेरी मात० ॥ धन्य सुकृति जिन दरसन पायो, 'शशिशेखर' सोइ मोहुँ सुहायो पुरवहु आश हमारी ॥ मेरी० ॥४४॥

❀ कौवाली ❀

मोपै दया दरसाइये हो, देव दयालो। हे करुणाकर करुणा सिन्धो, जग तारन जन आरत बंधो, हेरि हमें हरषाइये हो देव दयालो ॥ अघ भाजन हम तुम अघहारी, प्रणतपाल हम शरण तुम्हारी अवढर ढर ढरसाइये हो देव दयालो ॥ काम क्रोध मद ज्वाल जरत हौं, उपचारहु विपरीत करत हौं, बारि कृपा बरसाइये हो देव दयालो ॥ हौं हिय कुलिश कठोर महा है, ताते यह कर जोरि कहा है, नेह नवल सरसाइये हो देव दयालो ॥ अधिक दिनन ते आश लगी है आँखि दरस पय

प्यास पगी है, नेक न अब तरसाइये हो देव दयालो ॥
'शशिशेखर' लघु अरज हमारी, सुनि लीजिय प्रभु पाहि पुरारी, पद पंकज परसाइये हो देव दयालो॥४५॥

❀ कौवाली ❀

प्रीत पुनीत लगाये जैयो हो जीवन धन से ।
यह हरगिज तुम भूल न जाना, सग भगवान हैं देश विगाना, नित नव नेह बढ़ाये जैयो हो जीवन धन से ॥
नर तन कर फल यार यही है सब सन्तन सत शास्त्र कही है, प्रतिछन मनहिं पढ़ाये जैयो हो जीवन धन से॥
जग जीवन जस रैन का सपना, सोचि समुझि सब दिन शिव जपना, आलस दूरि भगाये जैयो हो जीवन धनसे॥
आज चला कोई काल चलेगा, जोन भजा हरि हाँथ मलेगा, उर फुरि बात जमाये जैयो हो जीवन धन से ॥
हर हालत हर सुमिरन करके, हर पद पंकज हिय मधि धरके, मोदक करन लुटाये जैयो हो जीवन धन से ॥
'शशिशेखर', तुम स्वामि हमारे, हम दासहु के दास तुम्हारे, निज करि नात निभाये जैयो हो जीवन०॥४६॥

❋ कौवाली ❋

अब दीन बंधु अपना लो मत करो बिलंब सु स्वामी।
जब से तुम बिछुड़े प्यारे, फिरते हम मारे मारे,
कबलौं धौं रहहु बिसारे, करुणा निधि अंतर्यामी।
सुर रूप कभूँ रहता हूँ, कृमि कीट भेष गहता हूँ,
संसृति कुदाह दहता हूँ, बिन बने नाथ निष्कामी।
सुख स्वर्ग कहूँ लहता हूँ, कहुँ नर्क ताप सहता हूँ,
भवनिधि मझार बहता हूँ, द्रवि लेहु नेक कर थामी।
केहि विधि विनती करिये जू, लखि कृत्य हिये हरिये जू,
'शशिशेखर' मोहि तरिये जू, करि निज जु नित्य अनुगामी

❋ कौवाली ❋

जग जानि असार सदा शिव को शुचि सार सुनाम उचार करो। नर जीवन पाय सखे हर के पद पंकज पै बलिहार करो॥ यह काल कलेऊ कलेवर को छन हूँ न प्रतीति सप्रीति सदा। प्रभु चिंतन त्यागि स्वचित्त विषे कबहूँ जनि अन्य विचार करो॥ वर वृत्ति विराग विशेष

तथा, बरि आय विवेक युनेन सोई । अति आतुर हीं पुर मैं उर के छलहीन प्रवीन प्रचार करो ॥ त्रय ताप सुतापित ह्वै अजहूँ कस बैठि बितावत बैस अहो । जेहि जाय जरावनि जीव शा, भलि भक्ति उमेश अधार करो ॥ भव अंबुधिते 'शशिशेखर' जू, यदि चाहहु त्राण तो आन सबै । बहु कर्मऽरु धर्म विहाय प्रभो शरणागत सद्य स्विकार करो ॥ ४८ ॥

❋ कौवाली ❋

हिय हुलसि मीत कहिये हरदम शिवहर शिवहर शिवहर शिवबम । शिव नाम सुहावन के कहते कृतोदय सद्य सुहोय सखे ॥ जन्मार्जित पाप हार नसे विनसे रवि के प्रगटे जिमि तम ॥ मति होय सुछन्द तथा मनहूँ थिरता अविलम्ब स्विकार करे । चित चञ्चलता परित्यागि सबै, प्रभु चिन्तन माहिं रहे तिमि रम ॥ उर अंकुर बीज विवेक उगै ममता मद मोह समूह भगै, शुचि सत्वर वृत्ति

विशेष जगै जेहि ते यह सृष्टि लगै सब सम ॥ भव नाशिनि भक्ति अनन्य भरे जनमे जेहि हेतु सो काज सरे, 'शशिशेखर' क्यों अब बेर करे पलमें तव प्राण हरे जड़ जम ॥ ४६ ॥

❀ कौवाली ❀

सुखमय शुचि सत्वर शान्तिशील सरसादिया भोले बाबाने । हह हुलसि हमें हियलाय हो हरषा दिया भोले बाबाने ॥ द्रवि देव सुदुर्लभ दिव्य देह द्रुत दीन देखि जिन दीन सुत्यों । दुरितावलि दोष दुराय दया दरसा दिया भोले बाबाने ॥ बहु जन्म विदाहक विष स्वरूप विषयाग्नि विनाशक वेगि विभो । वर बारि बिमल बाञ्छित विराग बरसादिया भोले बाबाने ॥ कुल कुमति कुटिलता कुसंस्कार करि दूर क्रूर कामादिक को । भव भेषज निजपद भव्य भाव भरसा दिया भोले बाबाने ॥ 'शशिशेखर' शंकर सर्वकाल शरणागत सादर स्वीकृत कै । पद पंकज पावन पुण्य पूर्ण

परसादिया भोले बाबाने ॥ ५० ॥

❀ कौवाली ❀

कहुरे मन मोद भरे निशिदिन शंभवे नमः शंभवे नमः। जपुरे सह प्रीति सदा छिन छिन शंभवे नमः शंभवे नमः॥ सच मानहि तोहि निहोरि कहौं तिन पायेउ लाभ अलभ्य सबै। शुचि सादर है सुमिरो जिन जिन शंभवे नमः शंभवे नमः॥ जेहि जाचत जोगि मुनीश अहो पद ईश प्रसाद लहै पै कोई। कहि बारेक पावत नर घिन घिन शंभवे नमः शंभवे नमः॥ कहु पेखि पुरा इतिहाशन को अरु बूझि विवेक निधानन सो। रटि कै नहिं श्रेय लह्यो किन किन शंभवे नमः शंभवे नमः॥ येहि काल कराल महा कलिमैं 'शशिशेखर' अन्य उपाय नहीं। जेहि ते हित होय तेरो इन बिन शंभवे नमः शंभवे नमः ॥५१॥

❀ कौवाली ❀

हित हेरि हरे हरषाय हिया भज राम सिया

जिन जन्म दिया। जनि जीवन बादि बितावे भिया भज राम सिया जिन जन्म दिया॥ धन धान्यऽरु आन समान धरे, सुत मीत यहीं रह जायँ परे। नहिं जावहि संग सलोनी तिया भज राम सिया जिन जन्म दिया॥ अस जानि सुपंथ सम्हार चले उर आनि विराग विचार भले। तजि विषयनि मन अनुमानि छिया भज राम सिया जिन जन्म दिया॥ तन मानव पाय न भूल कभी, करले करि यत्न सो कर्म सभी। जेहिते पर अत्र जुड़ाय जिया भज राम सिया जिन जन्म दिया॥ मत सश्रय सन्तन का करिकै, पद पीठनि शीशहिं को धरिकै। जन 'रामनारायण' व्यक्त किया भज राम सिया जिन जन्म दिया॥ ५२॥

❀ कौवाली ❀

शिव शङ्कर दीन दयाल प्रभो शरणागत के प्रतिपाल प्रभो। करुणा कर होहु कृपाल प्रभो, जन दीनन के रखवाल प्रभो॥ वर बदन मदन मद

टाल प्रभो त्रयलोचन ललित विशाल प्रभो । शिर गंग अंग बहु व्याल प्रभो शशधर शोभत भल भाल प्रभो । विष सोहत कंठ कराल प्रभो उर राजत मुंडन माल प्रभो । कर डमरु शूल खल शाल प्रभो वर अभय भगत सु निहाल प्रभो ॥ कटि किङ्किणि बनि फणि जाल प्रभो तिमि कसि केहरि कर खाल प्रभो । पग नूपुर मणिधर घाल प्रभो पद तल जनु अंबुज लाल प्रभो ॥ तुम हो कालहु कर काल प्रभो तउ तुष्ट बजावत गाल प्रभो । द्रविये करिये खुश-हाल प्रभो गनि 'भोलानाथ' स्वबाल प्रभो ॥५३॥

❀ कौवाली ❀

जगदीश्वर प्राण अधार हरे,
शरणागत के रखवार हरे ।
मम जीवन सर्वस सार हरे,
अघ ओघन कंज तुषार हरे ॥
खल गंजन भंजन भार हरे,
जन रंजन संत सम्हार हरे ।

सुर सिद्ध मुनीश्वर तार हरे,
शठ दुष्ट समूह सँहार हरे॥
तुम देवन देखि दुखार हरे,
बहु बार लिये अवतार हरे।
रिपु त्रासन शाशन कार हरे,
दुख दासन नाशन हार हरे॥
कुल कुमति कुवृत्ति कुल्हार हरे,
शुभ सुमति सुवृत्ति सुधार हरे।
ममता मद मोह निवार हरे,
समता सनतोष सँवार हरे॥
शुचि शोभन मोहन मार हरे,
विभु व्यापक विश्व विहार हरे।
सत् चित् आनन्द अपार हरे,
शिव सुन्दर सत्य उदार हरे॥
गुण मंदिर मंजु मुखार हरे,
द्रवि दीनन कीन सुखार हरे।
सब संसृति के करतार हरे,

भुवनैक भले भरतार हरे ॥
करिकै दृग कोर निहार हरे,
भवते किहु भाँति उबार हरे ।
नँद नंदन दास तुम्हार हरे,
बद 'भोलानाथ' पुकार हरे ॥ ५४ ॥

❋ कौवाली ❋

मझधार में आन पड़ी अबतो मेरी नैया को पार लगा देना । कहीं जाय न डूब दया करके इसे क्योंहूँ किनार लगा देना ॥ अतिजीरन नाव भई झँझरी, जलसों जगदीश्वर जात भरी । करिये अब देर न अर्ध घरी, शरणै कु सहार लगा देना ॥ घन-घेरे घटा लय कारी झुकी, अँधियारी दिशा भय कारी लगें । कहुँ दीखत वार न पार कछु बहु व्यग्र बिचार दिखा देना ॥ बरसे बड़ बुंदन बारि महा, झकझोरत वायु न जात सहा । दिग ज्ञान बिना नहिं राह मिले निरुपाय निहार बता देना ॥ बस बूड़ी-गई-अब ऐहो हहा, जन 'राघवराम' पुकारि

कहा । 'शशिशेखर' तूही शरण्य रहा छवि
येहि बार बचा देना ॥ ५५ ॥

❀ कौवाली ❀

मिलने की बहना फेर न ए कंचन सी कायारी
सच माने सुकृतों के फले अवसर यह आयारी ।
भव भरमत तोकों देखि त्राण करना जिय आयारी
तब दीन्हीं साधन रूप देह करके हर दाया री ।
तू भूली अपनो साध्य बिरस करि लीन्ही मायारी
रज में सो रही मिलाय हाय पारस जो पाया री ।
हो सजग सखी अब आय काल सोऊ नियराया री
जन्मार्जित जबहीं जाय अखिल कृत्यहिं भुगतायारी ।
नहिं होय सहायक पूत पती नहिं जिनने जायारी
'शशिशेखर' सोइ समर्थ सके संसृति सुरझाया री॥५६

❀ कौवाली ❀

हर सुमिरन करले सार यार क्यों सुरति भुलाना है
हा-शोक जोरि कर कौल ईश सम्मुखजो ठाना है ।
सो त्यागि अभागे आज अहो करता मनमाना है ।

यँह है अस्तित्व अनेक बहुरि सोई घर जाना है ।
कस काल कलेऊ काय निरखि नाहक इतराना है ॥
नहिं होत किमर्थ प्रतीति वेद सह वदत पुराना है ।
सब सन्त जनन की साखि तासु पर मुहर लगाना है ॥
सुनिये करिये हृदयस्थ निदरिये जनि गनि गाना है ।
"शशिशेखर' निश्चल नीति नमित कहत बिधिनाना है ५७

❋ धुन छोटी बड़ी सुइयाँ ❋

काशीजी की गलियाँ री मौजों में मेरा घूमना ।
एक सुख पाया मैंने गंगा के किनार में,
लेके फूल डलियाँ री देवों का मेरा पूजना ॥
दूजा सुख पाया मैंने भोला के सिंगार में,
फूलीं कुंद कलियाँरी हारों का मेरा गूथना ॥
तीजा सुख पाया मैंने भक्तों के मिलाप में,
पाँय परि परियाँ री आनँद का मेरा लूटना ॥
चौथा सुख पाया मैंने शंकर, के गुणगान में,
प्रेम उर भरियाँ री झोंकों में मेरा झूमना ॥ ५८ ॥

❋ वही धुन ❋

लेके फूल डलियाँ री शंकर का मेरा पूजना।
एक तो नहलाया मैंने गंगा जल धार से,
इत्र मलि मलियाँ री वदनों का मेरा सूंघना।
दूसरे चढ़ाया मैंने चन्दन उतार के,
मंजु बेलपतियाँ री गजरों से गला मूँदना॥
तीसरे दिखाया मैंने धूप दीप बार के,
भोग भरी थरियाँ री पानों की बीरी सौंपना।
चौथे जो मनाया 'सत्य नारायण प्रसाद' ने,
शीश पग धरियाँ री चरणों का मेरा चूमना ॥५६॥

❋ भजन ❋

तुम्हारी होवे जय जय कार।
करुणासिन्धु बंधु दीनन के अभिमत फल दातार॥ तु०
अशरण शरण हरन दारिद दुख करन दूरि भूभार।
तारन तरन परन पूरन प्रभु औढर ढरन उदार॥ तु०
अखिलेश्वर आनन्द धाम अघनाशन अमित विकार।
आशुतोष निर्दोष कोष शुभ शान्त सुहृद संसार॥ तु०

जन रंजन खल गंजन भगवन् भव भंजन भरतार।
सुर पालक असुरादिक घालक जगजालक करतार॥तु०
वरदायक सब लायक गुणगण जिसु गायक श्रुतिचार।
'शशिशेखर' सोइ ईश विनय मम कुरु सादर स्वीकार ६०

❀ भजन ❀

पतित होवे को है प्रण आज॥
तुम हौ पावन पतित कहावत सोइ देखन के काज॥ पतित०॥ हेय घृणित अधमाधम के अब हौं सजिहौं सब साज। दंभ कपट पाखंड पिशुनता आदि जहाँ लगि छाज॥ पतित०॥ कुलमान्यता सभ्यता गुरुता हरिहौं इनपर गाज। कर्म धर्म बैराग्य ज्ञान गुण ऐहौं सब सन बाज॥ पतित०॥ भय परलोक सहित लोकहु की तजिहौं सब बिधि लाज। 'शशिशेखर' एहि भाँति अघिन को हौं बनिहौं सिरताज॥ पतित०॥ ६१॥

❀ भजन ❀

हौं हर होड़ लाइ अघ करिहौं॥

अघहर नाउँ रावरो शंकर एहि विधि हौं ध्रुव टरिहौं। प्रतिदिन प्रातकाल उठि पावन परअपवाद उचरिहौं॥ करि परधन अपहरन श्वान जिमि अहनिशि स्वोदर भरिहौं। पर पीड़न पर बंचन पूरित वर ब्यापार सिधरिहौं॥ परहित-हानि पिशुनतादिकते मैं निज लाभ निकरिहौं। पर अकाज साधत समर्थ ज्यों संपति शक्ति बिसरिहौं॥ पर वैभव विलोकि बरबस त्यों हौं विशेष उर जरिहौं। पर दारा दर्शन परसन सों ईश दरश सुख सरिहौं॥ 'शशिशेखर' कीरति नशाय तव हौं हरषित भव परिहौं॥ ६२॥

❀ भजन ❀

जग महँ अधम न मोंसम आन॥ निशिदिन बसति कुमति उर अंतर पातक मय मम प्राण। पर धन पूरत पेट दारपर पेखत हिय हरखान॥ करत रहत दिन रैनि प्रीति सह पर अपवाद बखान। पर उपदेश परम पंडित चितते निजधर्म हिरान॥ पर दुख देखि न लेखि तृणहु सम-गिरि

समान स्वपिशान । पर गुण गनत न नेक एकहु निजगुण को अभिमान ॥ सुख न सुहात पराव स्वसुख बिनु मन महँ रहत मलान । अवलोकत अघ अमित आपने उर अतिशय घबरान ॥ 'शशिशेखर' हर आश एक तव अधम उधारन बान ६३

❋ भजन ❋

सुखमय संत जन की रहनि ॥
अमिय रस बोरी विशद बर बोधयुत प्रिय कहनि ॥
त्यागि अगुण विकार संकुल ज्ञान गुण गन गहनि ।
नीति अर्जित अहं बर्जित भार संसृति बहनि ॥
देश दीन दुखीन हित नित क्लेश शतशः सहनि ।
करि अकाम स्वकर्म ज्वालनि वासना तरु दहनि ॥
अखिल कृत्यनि केर फल भल भक्ति हरिहर चहनि ।
'चन्द्रशेखर' भव सरित तरि ईश पद हठि लहनि ॥६४॥

❋ भजन ❋

प्रभु मोहिं प्रेम भीख दै दीजै ।
तुम हौ देव दयालु दानि द्रुत दीन बचन

सुनि लीजै ॥ जाचत जुग कर जोरि बार बहु अब बिलंब नहिं कीजै । आतुरता अति बाढ़ि बिलोकत जो तन प्रति छन छीजै ॥ सुमिरत नाम गुनत गुण गन तव द्रवि यह देह पसीजै । गदगद कंठ ठाढ़ि रोमावलि बाष्प बारि दृग भीजै ॥ अस दिन आशु दिखाइय मोकहँ परमानँद रस पीजै । 'शशि शेखर' विसराइ अपन पौ जीवन मुक्त ह्वै जीजै ॥६५॥

❀ भजन ❀

कहो राम राम पटू राम राम राम ।
राम नाम मंत्र सार रटिकै शुक बार बार ।
होजा भव सिंधुपार, मंगल परिणाम ॥ कहो० ॥
राम नाम मंत्र राज, रटिकै वर विहँग आज ।
साधत कस नाहिं काज, अतिशय अभिराम ॥ कहो० ॥
राम नाम मंत्र मूल, रटु रे खग नाहिं भूल ।
अब जनि जग माहिं भूल, जोहै दुख धाम ॥ कहो० ॥
राम नाम मंत्र तत्व, रटु रे सारंग सत्व ।

१—यह भजन अपने सुग्गे को लक्ष्य करके बना है ।

जावे जरि पाप जत्व, तावे नहिं घाम ॥ कहो० ॥
राम नाम मंत्र बीज, रटु रे शुभ पत्नि नीज ।
आशुहिं आनन्द भीज, पूरे मन काम ॥ कहो० ॥
राम नाम मंत्र मानि, पढु पतंग प्रेम सानि ।
'राम शरण' भाँति आनि, नाहिन विश्राम ॥ ६६ ॥

❀ भजन ❀

रसना रस भीनि भले राम नाम गैये ।
तीरथ जोइ राम युक्त तहवाँ चलि जैये ।
संतन के दरश शान्ति हियमैं सरसैये ॥ रसना० ॥
सेवा शुचि राम केरि करिबे चित दैये ।
जाने जिय राम सबै माथ नमित नैये ॥ रसना ०॥
भोजन भल राम भुक्त है है खुश खैये ।
पी कै नित राम कथा श्रवणनि हृदि छैये॥ रसना०
सुन्दर शृंगार सुने सादर उठि धैये ।
देखे दृग राम दरश आनँद उमगैये ॥ रसना० ॥
मंजुल उर माँझ राम प्रेम बीज बैये ।

१—त्रिताप ।

कीन्हे फल कर्म सकृत राम भक्ति चैये ॥ रसना० ॥
आशा भय क्योंहु काहु मन मैं नहिं लैये ।
'राम करन' राम शरण भैये सुखपैये ॥ रसना ॥६७॥

❋ भजन ❋

श्री रघुपति राघव राजा राम ।
पतित जन पावन सीताराम ॥
मोद भेर मन भजहु निरन्तर जो चाहहु अभिराम ।
आन उपाय कदापि किये कलि नहिं पैहौ विश्राम ॥
ज्ञान गरै अरु योग जरै करि कौन परै भव काम ।
आशु सरै जेहि काज सुमिरु सो शुचि सहर्ष प्रभुनाम ॥
एहि मत मगन काल गति जानत जे मुनिवर गुणधाम ।
जौ भवलाग न तोहिं तौ जानहि भलिविधिभे विधिवाम
संशय विविध बिहाय जाय निज इष्ट शरण निःकाम ।
गावहु सतत सप्रीति 'चन्द्रशेखर' गिरीश गुण ग्राम ॥६८॥

❋ भजन ❋

कुछ सोच समझ मेरे भाई तेरी मति काहे बौराई ।
जिसे समझता है तू अपना-नहिं उसमें अपनाई ॥

ऋणानुबंधी है यह मेला कर्म विपाक लगाई ॥ तेरी०
पहले का लेना या देना है जिसका जैसाई ।
बन बेटा या बाप आपका सो लेता देताई ॥ तेरी०
होता नहीं जब तलक तेरा वह हिसाब भरपाई ।
तभी तलक बस है इन सब से सच मानले सगाई ॥ तेरी०
आगम निगम पुरान बखानत संतहु साखि बताई ।
'शशिशेखर' जग भूल भूलमत भजले शंभु सदाई ।६६।

❀ भजन ❀

नहिं हुआ होश अबताई यह है कैसी लरिकाई ।
रहा ठीक बेहोश उस समय जब माता जनमाई ॥
रोया, पीटा खेला कूदा वह तो यौंहि बिताई ॥ यह०॥
बढ़ा हुआ सुकुमार जवानी अब तेरी नियराई ।
लच्छेदार केश लहराते मूछें ऐंठ बनाई ॥ यह० ॥
गिने नहीं अपराध किये जो जो तेरे मन भाई ।
सम्हल२ अब भी तो सम्हल जा आई निकट बुढ़ाई॥ यह०
लगे कपन जब अंग सपन सब होगये मौज मजाई ।
चेता नहीं अभी भी अब क्या चेते चित्त चिताई ॥

यह० ॥ किये नहीं वह काम कौल करके आया जिनकाई। रँगा उसी के रँग तू देखा जब जिनकी अधिकाई ॥ यह० ॥ खैर हुआ सो हुआ न रोवे है जो बात गँवाई। 'शशिशेखर' होशरण शम्भु के बिगरी बेगि बनाई ॥ यह० ॥ ७० ॥

❋ भजन ❋

अगर है अभिमत फल लहना, मेरे मन मानो यह कहना ॥ नर जीवन वर पाय शीलका पहनो तुम गहना। साँसति सहस सहाय दैव सोउ सुख युत सब सहना ॥ मेरे० ॥ धन जन को बल पाय भूलिमत दुखियन को डहना। निशि दिन सुमिरि नाम शंकर को पाप पुंज दहना ॥ मेरे० ॥ करि शिवभक्ति बासना तरु को सहित मूल ढहना। लोक लाभ परलोक सुगति को नहिं हर सों चहना ॥ मेरे० ॥ धरि दृढ़ ध्यान प्रेम नदमें नित बिन सुधि बुधि बहना। 'रामकिशोर' रहित सिव आशा शरण शम्भु रहना ॥ मेरे० ॥ ७१ ॥

❁ भजन ❁

आ पड़ा द्वार दुख मारा, क्या मेरे लिये विचारा। शुचि साधन संपन्न सुजन जो वही आपका प्यारा॥ मैं हूँ कुटिल कुबुद्धि कुकर्मी निपट निरत संसारा॥ क्या०॥ वर्णाश्रम अनुकूल आचरण होता नहीं हमारा। ज्ञान विराग विहीन दीन मैं लंपट लंठ लबारा॥ क्या०॥ जाना नहीं प्रेम होता क्या तव पद कमल मझारा। फिर भी सच मानिये मुझे कोइ है नहिं और सहारा॥ क्या०॥ नत विनीत पूछता जोरि कर कहिये शंभु उदारा। 'शशि शेखर' मुझ अधम व्यक्ति का है या नहीं गुजारा क्या०॥ ७२॥

❁ भजन ❁

मैं जाऊँ बलिहार शिव पै॥ मैं जाऊँ०॥ शोभा सदन मदन छबि वारों लखि वर बदन तुम्हार। अतिहि अमोल कपोल गोल पै लटकत है लटकार॥ शिवपै०॥ राजत रुचिर त्रिपुंड इंदु

भल शिर सुर सरित बहार । कंठ गरल जनु मणि मरकत हिय मंजु मनोहर हार ॥ शिवपै० ॥ कर मुद्रिक भुज बंद देखि दृग एकटक रहत निहार ॥ शिवपै० ॥ कटि किंकिनि कसि नील लीन पट फहरत फंबत अपार । बरबस लेत चुराय चित्त सोइ पग नूपुर झनकार ॥ शिवपै० ॥ 'शशि शेखर' पद नख अवलोकत जो दामिनि दुति धार ॥शिवपै०॥

❀ भजन ❀

त्रिपुरारि मोरी प्यारी प्यारा लगे ॥ त्रिपुरारि०॥ दर करपूर धवल भल सुंदर लागि अतन तन छारि मोरी प्यारी प्यारा० । जनु मालति कर माल जटा बिच सोहति सुरसरि धारि मोरी प्यारी प्यारा० ॥ मृगमद केशरि खौर सहित शुचि भाल चंद मनहारि मोरी प्यारी प्यारा० ॥ रहित कलंक मयंक बदन पर लटकत है लटकारि मोरी प्यारी प्यारा लगे । कंठ गरल मणिनाग हार उर शोभा है अति भारि मोरी प्यारी ॥ प्यारा० ॥ प्रति अँग अंग सुसाजि

विभूषण रद अनंग करि डारि मोरी प्यारी ॥ प्यारा० । कटि किंकिनि नीलाम्बर पद नख दीन इंदु दुति टारि मोरी प्यारी ॥ प्यारा० ॥ 'शशिशेखर' शत बार सखीरी जाऊँगी मैं बलिहारि मोरी प्यारी प्यारा० ॥ ७४ ॥

❀ भजन ❀

गौरा के दुलहवा देखो कैसा अड़भंगा हो । गौरा० ॥ बाघंबर की कछनी काछे गौर मनोहर अंगाहो ॥ गौरा० ॥ भाल तिलक चन्द्रमा विराजैं जटाजूट में गंगा हो ॥ गौरा० ॥ चिता भस्म तन माहिं रमाये और जमाये भंगा हो ॥ गौरा० ॥ कालकूट को असन कियेहु रहे सदा सो चंगा हो । गौरा० ॥ ब्याल कपाल विचित्र विभूषण ढंग समस्त कुढंगा हो ॥ गौरा० ॥ बूढ़ बसह चाढ़ि डोलत आवे दिशा वस्त्र तन नंगा हो ॥ गौरा० ॥ डिमिक डिमिक कर डमरु बजावै लिये भूत गन संगा हो ॥ गौरा० ॥ 'शशिशेखर' उर बसहु हमारे पारवती अरधंगा हो ॥ गौरा० ॥ ७५ ॥

❀ भजन ❀

हर हर महादेव हर हर महादेव, मोंको चरण में लगालो मेरे देव॥ हौं तो सही मैं पापी पुरानो पावन विरद पै तिहारो मेरे देव॥ हर हर०॥ जाऊँ तुम्हैं तजि काके कहो ढिग दैहै को मोहिं सहारो मेरे देव॥ हर हर०॥ मैं हूँ अनाथ सनाथ करो हो जानि निजोई सम्हारो मेरे देव॥ हर हर०॥ नैया परी मझधार हमारी सूझत नाहिं किनारो मेरे देव॥ हर०॥ हे कर्णधार हमार दयामय कैसेहु पार उतारो मेरे देव॥ हर०॥ आये शरण को त्यागे बनै नहिं सो निज नीति विचारो मेरे देव॥ हर हर०॥ आनन आश भरोस रह्यो कछु ताते तुम्हैं मैं पुकारो मेरे देव॥ हर०॥ 'शशिशेखर' गनि दास करो हो जीवन सफल हमारो मेरे देव॥ हर०॥७६

❀ होरी ❀

साँची कहो त्रिपुरारी खबर कब लेहौ हमारी। मैं मति हीन मलीन दीन जन अतिशय अबुध

अनारी ॥ कीन्ह न संगति साधु जनन की जे विवेक व्रतधारी, स्वमति जिन कीन्ह उज्यारी ॥ साँची० ॥ श्रुति पुराण सदग्रन्थ पढ़े नहिं क्यों गति जाय गँवारी। बुध अरु बृद्ध वरिष्ठ शिष्ट सन रहि विरक्त अविचारी, करत निज मन अनुसारी ॥ साँची० ॥ एहि विधि वृत्ति विशेष उछृंखल खल कामादि निहारी। सहित समाज साज सगरे सजि सो सब भाँतिन सारी, बनिहुँ बदि बात बिगारी ॥ साँची० ॥ करुणासिंधु अनाथ बंधु हर तापर तुमहुँ बिसारी। 'शशि शेखर' असहाय हाय अब केहिके जाय दुआरी, कहहु कहि काह पुकारी ॥ साँची० ॥७७॥

❋ चौताल ❋

भंजुर मन छाँड़ि सयानी, महेश भवानी ॥ जो समरथ सर्वज्ञ सर्वहित सरल सकल सुख खानी। सुयश सुचारु सुचित संतत शुचि श्रुति बरनत वर बानी ॥ महेश० ॥ विधि हरि इन्द्र कुबेर चन्द्र दिन पति सुर वर मुनि ज्ञानी। सेवत सहित सनेह

नमित नित, जेहि जग नायक जानी ॥ महेश० ॥ एकहौं होहुँ बहुत फुरतेहि जेहि उपजत सृष्टि महानी। निज सत्ता जोइ धरत भरत सोइ हरत स्वमध्य समानी ॥ महेश० ॥ अस सब भाँति अकथ करनी कथि को कवि सकत बखानी । 'शशि शेखर' मन बचन करम नत बिनवत जुरि जुग पानी ॥ ७८ ॥

❋ चौताल ❋

हर सुमिरत नाहिं अनारी अधम अविचारी। जेहि एहि दीन्ह जनम जगती तल देखि दयाल दुखारी। तेहि मतिमंद अंध हिय लोचन निरलज निपट बिसारी ॥ अधम० ॥ सुत बित नारि सपन संपति शठ सोइ सब भाँति सम्हारी। विष परिणाम विरुचि विषयनि सम मानि सुधा शिर धारी ॥ अधम० ॥ संत कहत सतग्रन्थ बखानत संसृति सहज बिकारी। समुझत शत प्रकार स्वयमहु तउ सेवत सतत सुखारी ॥ अधम० ॥ अजहुँ अबूझ बूझि परमारथ लेहि न स्वगति सुधारी। 'शशि-

'शेखर' सह प्रीति भजहि भल-भवपद भवभयहारी॥७६॥

❀ चौताल ❀

हर सुमिरत नाहिं अनारी अधम अविचारी। जेहि सुमिरत हिय लाय विष्णु अज त्रिदश पुरंदर भारी। जासु विशद गुण गाय सतत श्रुति होत सुआरथ सारी॥ अधम०॥ जासु अतुल बल लेश पाइ जग सृजत सकल मुखचारी। जासु प्रभाव प्रभावित है हरि पालत रुद्र सँहारी॥ अधम०॥ जासु अमित सामर्थ्य सहारेहि अविरत इंदु तमारी। अजहुँ सहित उडुगन गन पेखहि बिचरत गगन मझारी॥ अधम०॥ जासु चरण रज पाइ सुरहु मुनि होत कृतारथ भारी। 'शशि शेखर' शठ भूलि विविध भ्रम तेहि हतभाग्य विसारी अधम०॥८०॥

❀ चौताल ❀

मन मानहि बात हमारी बनहि बदि सारी॥ नेक न श्रम नहिं भ्रम मारग जेहि सोइ कहौं सुविचारी। श्रुति सम्मत सन्तन अनुमोदित शुचि

आचरित अचारी ॥ बनहिं० ॥ सरल सुगम सब भाँति सुहावन शाश्वत शुद्ध निहारी । जग पावन सुर मुनि जन भावन दुरित दुरावन भारी ॥ बनहिं० ॥ तम नाशक गुण ज्ञान प्रकाशक हासक बुद्धि विकारी । त्रासक राग विराग विकाशक शाशक शीघ्र षटारी ॥ बनहिं० ॥ छाड़ि कपट छल छिद्र 'शरण शिव सुन्दर' होय सुखारी । 'शशि-शेखर' सानन्द भजहि भल भवपद भव भय हारी ॥ बनहिं० ॥ ८१ ॥

❀ फाग ❀

चलि काशी बसो सुखरासी पिया ॥ चलि० ॥ काशी की महिमा खासी सुनी मैं मुक्ति बनी फिरै दासी पिया ॥ चलि० ॥ दर दर देव देवालय सुन्दर देव सदृश ही बासी पिया ॥ चलि० ॥ सुरसरि धार सुहावन पावन जासु है विश्व उपासी पिया ॥ चलि० ॥ सहज सुसन्त समागम कीन्हे क्लेश कुवृत्ति बिनाशी पिया ॥ चलि० ॥ खान

पान ... चोखी जुगुति त्यों है सब भाँति सुपासी पिया ॥ चलि० ॥ 'शशिशेखर' नित देखें नयन भरि विश्वनाथ अविनाशी पिया ॥ चलि० ॥ ८२ ॥

❀ फाग ❀

ऐसी मन आवे प्राण पिया ॥ ऐसी० ॥ शिव तेरस तिथि आय गई है, उस दिन जावे बर्त किया ॥ ऐसी० ॥ प्रात काल उठि न्हाय जाह्नवी, पञ्चाक्षर जपि शुद्ध हिया ॥ ऐसी० ॥ लिंग दरस करि मुख्य मुख्य पुनि आय कथामृत जाय पिया ॥ ऐसी० ॥ निशि प्रवेश प्रति प्रहर पूजि हर जाय परम आनन्द लिया ॥ ऐसी० ॥ गीत बाद्य रचि नृत्य यामिनी पल सम जाय बिताय दिया ॥ ऐसी० ॥ 'शशिशेखर' जिन अस कीन्हों नहिं सो जग में जड़ बादि जिया ॥ ऐसी० ॥ ८३ ॥

❀ फाग ❀

जै जै शिव शंकर पारबती ॥ जै जै० ॥ सुयश तुम्हार विदित त्रिभुवन महँ, तुम हो पावन

पतित कृती ॥ जै जै० ॥ मैं सुनि शब्द सुहावन दूरेहि आयेउँ, पेखन पास गती ॥ जै जै० ॥ परिचय मोर दयामय सुनिये, हौं सब पतितन केर पती ॥ जै जै० ॥ काम क्रोध चिर संगी हमारे, हरि लीन्हों तिन्ह मोर मती ॥ जै जै० ॥ हौं तेहि करि पातक उपपातक, करत रहौं सब केर अती ॥ जै जै० ॥ जेहि विधि होय निवारन तिनकर, सो न करौं तव चरणरती ॥ जै जै० ॥ राखहु लाज देव अब कैसेहु, होय न जामहिं विरदछती ॥ जै जै० ॥ 'शशिशेखर' कर जोरि निहोरौं, बार बार करि कोटि नता ॥ जै जै० ॥ ८४ ॥

❀ फाग ❀

हर गौरि बसे हमरे मन में ॥ हर० ॥ श्री हर गौरि सुकीरति गाये, पातक नाहिं रहे तन में ॥ हर० ॥ श्री हर गौरि सुनामहिं सुमिरत, सुकृत बढ़त प्रतिही छन में ॥ हर० ॥ श्री हर गौरि स्वरूपहिं ध्यावत, साम्य होत सबही जन में ॥ हर० ॥

श्री हरगौरि के शरण सिधारत 'शशिशेखर' गनिगे गन में ॥ हर० ॥ ८५ ॥

❋ फाग ❋

हर हर हर सुमिरो होरी में ॥ हर० ॥
हर सुमिरत हरभाँति होत हित, सुख सुहात सब ओरी में ॥ हर० ॥ पातक प्रबल परात जात जिमि, तिमिरादित्य उजोरी में ॥ हर० ॥ नहिं कछु आन उपाय सुगति तव होय जुगुति जेहि थोरी में ॥ हर० ॥ साखि बदत संतत सहर्ष सब, संत कहत श्रुति जोरी में ॥ हर० ॥ सोइ प्रतीति उर आनि बेगि दृढ़, करहि स्वमति अति भोरी में ॥ हर० ॥ 'शशिशेखर' हर निरत होहि अस, काम विवश जस गोरी में ॥ हर० ॥ ८६ ॥

❋ फाग ❋

बसिगे मन मोरे महेश अली ॥ बसिगे० ॥
जादिन जाइ लख्यों आनँद बन तादिन ते मति मोरी छली ॥ बसिगे० ॥ मोहक मदन बदन भल

सुन्दर शुभ्र धवल जस कुन्द कली ॥ बसिगे० ॥ बिधुयुत भाल विशाल विलोचनन्हि अवलोकनि मोहिं लागी भली ॥ बसिगे० ॥ मरकत मणि छवि सींव श्रीवद्र उदर लसत वर तीनि बली ॥ बसिगे० करधर शूल मूल भव हर कटि केहरि कृत्ति कसे असली ॥ बसिगे० ॥ 'शशि शेखर' पद कमल युगल लखि एकटक दृग पूतरि न टली ॥ ८७ ॥

❀ रसिया ❀

हर हर की रटनि लगाव रसिया ॥ हर हर० ॥ श्री हर हर की रटनि लगा कर तनकी तपनि बुझाव रसिया ॥ हर० ॥ जनम जनम के जंग लगे उर सपदि सपंक छुटाव रसिया ॥ हर० ॥ बिनु श्रम होय विवेक विमल चित मति सत संग सटाव रसिया ॥ हर० ॥ 'शशिशेखर' शिव चरण शरण गहि, पुनरागमन नशाव रसिया ॥ हर० ॥ ८८ ॥

❀ रसिया ❀

क्यूँ ना सोचै है तू मन में तेरो जनम अका-

रथ जाय ॥ क्यूँ० ॥ वादिन की सुधि करले जा दिन पर्यो गर्भ मैं आय। सांसत सह्यो लह्यो नाना दुख रह्यो विपति सों छाय ॥ क्यूँ० ॥ जठर ज्वाल के कठिन ताप सों दह्यो निरन्तर जाय। करत दंस निशि द्योस ताहु पै उदर जन्तु गन घाय ॥ क्यूँ० ॥ और न देखि सहायक निज ढिग प्रभुसों विनय सुनाय। कर संपुट कर भजन करन हित बहु बिधि कौल दृढ़ाय ॥ क्यूँ० ॥ 'शशि-शेखर' एहि भाँति जबहिं जड़ तू आयो बहिराय। लंपट ह्वै लोलुप विषयनि मैं दियो ईश बिसराय ॥८६॥

❀ रसिया ❀

पायों मैं शिवके शरणवाँ हो जिया भरि ग हमार। जब से मैं शिव के सन्निधि छाड्यों, मे बहु जन्म मरणवाँ हो जिया० ॥ देव कबहुँ कृमि कीट योनि लहि करि बहु भोग बरनवाँ हो जिया० भरम्यों भेष अनेकन धारे जाइन जिव के जरनवाँ हो ॥ जिया० ॥ तब अकुलाय पाहि प्रभु टेर्यों गे

शाप दुःख हरनवाँ हो जिया० ॥ कै हग कोर निहारि मोरि सब कीन्हेउ दैन्य दरनवाँ हो ॥जिया०॥ जन 'बलराम दास' अपनो करि राखेउ निकट चरणवाँ हो ॥ जिया० ॥ ६० ॥

❀ चैती ❀

शिव से सनेहिया लगाइब हो रामा। शिव सनेह सुखखान जगत में यह परतीति दृढ़ाइब हो रामा ॥ वर नर देह अमर दुरलभलहि, मैं नहिं बादि गँवाइब हो रामा। शिव की भक्ति प्रचंड दवानल, द्रुम बिषयादि जराइब हो रामा ॥ जे विषयी हर विमुख पापरत ज्यों फणि तिन्हिं डराइब हो रामा। भव अनुराग सिंधु झख जनते, दिनप्रति प्रीति बढ़ाइब हो रामा। 'शशिशेखर' हर शरण होय हम जीवन मुक्त कहाइब हो रामा॥६१॥

❀ चैती ❀

आजु बिकार बिहाइब हो रामा। मोह मूल प्रद शूल जोइ सोइ हद करि मदहिं नसाइब हो

रामा ॥ गुण गुरुता कुल मान्य श्रेष्ठता सब धरि धूरि मिलाइब हो रामा। मम आचरण रूठ हरजन जे परि परि पाँय मनाइब हो रामा ॥ करि शत यत्न निहोरि भाँति भलि मैं अनुकूल कराइब हो रामा ॥ पुनि न होय अपराध सन्त कर बहुबिधि मनहिं सिखाइब हो रामा। 'शशिशेखर' सानंद सुजन मिलि हौं हरके गुण गाइब हो रामा ॥९२॥

❋ कजरी ❋

शिव शिव रटनि करो मोरे भैया हौ यदि पार जैवैया ना। एहि संसार अपार सिन्धु में शिवहि खेवैया ना ॥ शिव० ॥ धन जाया परिवार मोह मधि बाँधि बोरैया ना शिव०॥ साधन सकल सिरान काल यहि नाहिं सहैया ना ॥शिव०॥ जन 'भैरव' सोइ जानि शंभुकी देत दुहैया ना ॥शिव०।९३॥

❋ कजरी ❋

शंकर शरण गह्यो ना रे साँवलिया। सुकृत समूह साध्य देही लहि, शिव शिव सतत कह्यो ना

रे साँवलिया ॥ करि इकठोर बहोर विश्वपति चिंतन चित्त चह्यो ना रे साँवलिया । पूरण प्रेम पयोधि शंभु के सुधि बुधि रहित बह्योना रे साँवलिया ॥ निज निश्चय निर्वात दीप शिख संसृति शलभ दह्योना रे साँवलिया । जो गति अगम योगि सिध तापस सो कस सहज लह्योना रे साँवलिया ॥ 'शशिशेखर' पद कमल रसिक बनि मधुकर मूढ़ रह्योना रे साँवलिया ॥ ६४ ॥

❁ कजरी ❁

बादि तोर बयस बिहाने रे साँवलिया ॥ नरतन नीक अमर दुरलभ लहि शिवपद नहि पहिचाने रे साँवलिया ॥ बाल बयस खेलन में खोयो तरुण तरुणि रससाने रे साँवलिया ॥ आइ जरा जम घेरि लियो जब तब जड़मति अकुलाने रे साँवलिया ॥ 'शशिशेखर' हर शरण भयो नहिं जीवन निपट नशाने रे साँवलिया ॥ ६५ ॥

❀ कजरी ❀

हरि हरि काशी पति अविनाशी शिव सुखरासी रे हरी ॥ बायें अग बिलासी जिनके अर्धांगिनि गिरिजासी रामा । हरि हरि शची रमासी जाकी खास खवासी रे हरी ॥ हरि० ॥ गोरे अंग बिकासी हरने द्युतिवर विद्यु छटासी रामा । हरि हरि बदन मंजु मनमोह मदन मन हासी रे हरी ॥ हरि० ॥ सुन्दर शीश सुधासी सुरसरि सोहति शुचि सुखमा सी रामा, हरि हरि बाल चन्द्र भल भाल प्रभा सुप्रकाशी रे हरी॥हरि०॥ त्रयलोचन भयनाशी हेरत हरत हीनता खासी रामा । हरि हरि भूषण विविध भुजंग भूति भलि भासी रे हरी ॥ हरि० ॥ कटि पट पीत अघासी बैठे चारु चर्म हरि[२] डासी रामा । हरि हरि चरण अरुण नख नीक चमक चपलासी रे हरी ॥ हरि० ॥ जो त्रयपुर पुरितासी जाकी जग में ज्योति जनासी रामा ।

१ अघ—पाप काटने के लिये तलवार २ सिंह ।

हरि हरि 'शशिशेखर' सोइ होहु अजिर उर बासी रे हरी ॥ हरि० ॥ ६६ ॥

❀ कजरी ❀

मो रे हरी के लाल चलु सखि देखिय वाराणसी बहार ॥ मो रे० ॥ पावन परम पुनीत विमल जहँ बहत गंग वर धार। रुचिर मनोहर घाट विराजे पंडित पुलिन हजार ॥ मोरे० ॥ करत दिव्य ध्वनि ऋक यजु साम उचार ॥ मो रे० ॥ सांकरि सुघरि स्वच्छ गलियन की शोभा अमित अपार। भ्रमत पथिक आनन्द मगन उर पुर रम्यता निहार ॥ मोरे ० ॥ डोलत सरस सुहावन त्रिबिध बयार ॥ मो रे ० ॥ कनक कलश मणि खंभ खचे हैं फटिक भूमि अविकार। चकमकात दृग देखतही चहुँ कंचन लगे किंवार ॥ मोरे० ॥ सलिल सुबासित फर फर छुटत फुहार ॥ मो रे० ॥ घनन घनन ख घंट होत हर आरति मंगल चार। चमर 'राजनारायण' ढोरत विश्वनाथ दरबार ॥ मोरे० ॥ नगर नारि नर

जै जै द्वार पुकार ॥ मोरे० ॥ ९७ ॥

❁ कजरी ❁

मोरे हरी के लाल करहु मित्र गन हर कीरतन समाज ॥ मोरे० ॥ ध्यान यज्ञ योगादि अपर जे वर विमुक्ति के साज । नाहिन किमपि समर्थ सोचु जिय एहि अवसर अब आज ॥ मोरे० ॥ भव भेषज भव भजन भक्ति भल भ्राज ॥ मोरे० ॥ काम क्रोध लोभादि दोष दुख बृंद बिहंगम छाज । संकीर्तन सुनाम शंभु तेहि बिडरि बिनाशक बाज ॥ मोरे० ॥ बदत संत श्रुति सब साधन शिर ताज ॥ मोरे ०॥ श्रम न रंच नहिं व्यर्थ अर्थ व्यय नाहिन अन्य अकाज । मन रंजन परलोक सँवारन एक पंथ द्वै काज ॥ मोरे० ॥ विधि वंचित जेहि करत लाग तेहि लाज ॥ मोरे० ॥ काल्हि करब एहिं भाँति टारिबो तजु कापुरुष रिवाज । को जानै कौने छन तोहिंपर डारैंगे जम गाज ॥ मोरे० ॥ सर्व काल निर्भय 'शिवशरण' विराज ॥ मोरे०॥९८॥

❋ कजरी ❋

आइ गैलँ बरखा बहार सुन सखिया ॥ घन घेरि ओैलँ, नभ मंडल पै छैलँ, भैलँ सुख लोचन निहार सुन सखिया ॥ आइ० ॥ मोर बन बोले, कूक कोकिल अमोले, डोले मन्द शीतल बयार सुन सखिया ॥ आइ० ॥ मंजु रस भीनी, मन मादे मो रे कीनी, झीनी झीनी झरले फुहार सुन सखिया ॥ आई० ॥ बार सोम मानी, मास सावन सयानी, हुलसले हियरा हमार सुन सखिया ॥ आइ० ॥ गोंइयन के बोलाईं, चलीं गंगाजी नहाईं, जाईं हर मंदिर उदार सुन सखिया ॥ आइ० ॥ आसन लगाईं, चित्त बृत्ति ठहराईं, ध्याईं भव मानस मझार सुन सखिया ॥ आइ० ॥ नीर नहवाईं, फूल पातिहु चढ़ाईं पूजीं शिव सोरहो पचार सुन सखिया ॥ आइ० ॥ बरतौ करीं जी, उर आनँद भरीं जी, तरीं 'शत्रुसूदन' सुनार सुन सखिया ॥ आइ० ॥ ६६ ॥

❋ कजरी ❋

हे आशुतोष मैं हूँ शरणागत तोरी अरे साँवलिया ॥ जगसे नाता तृण ज्यों तोरे, मैं आई हूँ मनमुख तोरे। मोरे नाथ हाथ है लाज आपके मोरी अरे साँवलिया ॥ जिन जिनसे है नातेदारी सब हैं मतलब के व्यापारी, यारी देखली गई है दुनियाँ की कोरी अरे साँवलिया ॥ जिसका किया भरोसा जावे, ऐसा कोई नज़र न आवे, धावे सभी आजकी काल काल की ओरी अरे साँवलिया ॥ तुम हौ समरथ श्री भगवाना, सब देवों ने भी सनमाना, जाना जभी आपकी हुई कृपा की कोरी अरे साँवलिया ॥ तुम हौ अखिल विश्व के स्वामी, तुमको है बहुबार नमामी, गामी वृषभ माफ़ करना मोरी सब खोरी अरे साँवलिया ॥ गिरिजापुर वर शहर निवासी, पत्नी 'शशिशेखर' सुखराशी, दासी तुच्छ तिहारी बरनै बृज किशोरी अरे साँवलिया ॥ १०० ॥

❀ कजरी ❀

चलो गुइयाँ काशी जी नहाने अरे साँवलिया ॥
काशी है कैलाशी खासी, सेवक्क जन सुखदासी,
बासी रूप शील गुणमय सुंदर सयाने अरे साँवलिया ॥
चलो० ॥ गंगधार लहराती, शोभा शत गुण तासु
बढ़ाती, भाती पापराशि कटजाती हग दिखाने
अरे साँवलिया ॥ चलो० ॥ जो जो स्नान निमित्त
उतरते, करि सरि मज्जन आनँद भरते, करते संध्या
पूजा तरपन बिधि बिधाने अरे साँवलिया ॥चलो०॥
प्रायः हर देवालय प्यारी, होती कथा श्रवण सुख-
कारी, जारी प्रथा किये हैं सज्जन जन पुराने अरे
साँवलिया ॥ चलो० ॥ बी रेश्वर बिश्वेश्वर आली,
होता है शृंगार कमाली, माली हार लिए बैठे हैं
सब ठिकाने अरे साँवलिया ॥ चलो० ॥ ऐसे हैं
कितने गृह बासी, जिनसे हों लज्जित सन्यासी,
नाशी वृत्ति विलासी रहैं भक्ति रस साने अरे
साँवलिया ॥ चलो० ॥ गुणगन अमित जासु के

हेरी, श्रुति ने महिमा कही घनेरी एरी—रहें इसे सुर नर मुनि सब सनमाने अरे साँवलिया ॥ चलो० ॥ बिधिने भुक्ति मुक्ति एकपेटी, धरदी बाराणसी समेटी, बेटी 'शशिशेखर' की आनँदमई बखाने अरे साँवलिया ॥ चलो० ॥ १०१ ॥

❀ कजरी ❀

जो नहिं शिव शंकर गुन गाते वा नर जन्म नशाते हैं ॥ जो नहिं० ॥ बड़े भाग तन मनुज पाय सो व्यर्थ गँवाते हैं ॥ जो नहिं० ॥ परिमाया परपंच बीच करतब्य भुलाते हैं ॥ जो नहिं ॥ सुत वित नारि हेत पामर जन वयस बिताते हैं ॥ जो नहिं० ॥ जीवन रतन अमोल विषय रज माँहिं मिलाते हैं ॥ जो नहिं० ॥ यों दिन बादि बिताय मूढ़ जब यमपुर जाते हैं ॥ जो नहिं० ॥ तब सरजू परसाद दूत गन बहुत सताते हैं ॥ जो नहिं० ॥ १०२ ॥

❀ कजरी ❀

जो नर शिव शंकर गुन गाते अपना जन्म

बनाते हैं ॥ जो नर० ॥ बड़े भाग तन मनुज पाय सो सफल कराते हैं ॥ जो नर० ॥ परिमाया परपंच न निज करतब्य भुलाते हैं ॥ जो नर० ॥ सुत वित नारि सनेह सने नहिं बयस बिताते हैं ॥ जोनर० जीवन रतन अमोल विषय रज नाहिं मिलाते हैं ॥ जोनर० ॥ यों दिन सुखद सिराय साधु जब सरग सिधाते हैं ॥ जो नर० ॥ तब हरिदास रुद्र गन तिन कहँ चमर डुलाते हैं ॥ जो नर० ॥ १०३ ॥

❀ कजरी ❀

जै जै राम जै जै राम जै जै राम कहो जी ॥ तजि मोह मद काम अनुरागि आठो याम ॥ जै जै राम० ॥ राम नाम सुख दैन कहिये जु दिन रैन, एहि लोक परलोक यदि चैन चहो जी ॥ जै जै राम० ॥ जासु महिमा अपार शास्त्र संतहू पुकार, हिय धार क्यों न तासु को अधार गहो जी ॥ जै जै राम० ॥ कीजै रटनि हमेश छीजै कुमति कलेश, जीजै तौलों यहै जीवन को लाहु लहोजी ॥ जै जै राम० ॥ आशुहुजै लवलीन जानी जात

कल कीन, श्रम हीन अघ कीन दुःख दोष दहो जी ॥ जै जै राम० ॥ ऐसो लागे तव लग्न देह-स्मृति होय भग्न, नेह सर मगन बेसुध विशेष बहो जी ॥ जै जै राम० ॥ भव भय के हरन्न भुक्ति मुक्ति के भरन्न, "राम सरण" सदैव समुहाय रहोजी ॥१०४॥

❀ कजरी ❀

शंभु सोहते सुढंग शिवा संग बलमू । दोउ दिब्य छबि ऐन, कोउ पटतर हैन, देखि मैन होत है सदार दंग बलमू ॥ शंभु० ॥ माय चंपक बरन, बाबा मोरे गोरे तन, मन मोहे लागि भूति भले अंग बलमू ॥ शंभु० ॥ देवि शीश शीश फूल, देव के जटा अतूल, जामें रही सुख मूल मातु गंग बलमू ॥ शंभु० ॥ भाल वेंदी शक्ति धारे, स्वामी के हैं इंदु बारे, प्यारे लागें धारे भूषण भुजंग बलमू ॥ शंभु० ॥ कटि किंङ्किणीं लसी है, कृति केहरि कसी है, वसी है हिए पदावली सुरंग बलमू ॥ शंभु० ॥ नत बिनती करीजै, 'गौरीशंकर' सुनीजै, मोपे

कीजै कृपा की भरी भ्रू भंग बलमू ॥ शंभु०॥१०५॥

❁ कजरी ❁

बा विचार यार अबकी के सवनवाँ में।
बाटै निश्चय हमार करिहैं पूरा करतार॥ बा विचार०॥
रोज गंगाजी नहाईं, शिव मंत्र सौ दहाईं, जपीं सार यार अबकी के सवनवाँ में ॥ बा विचार० ॥
सोमवार सुखदाई, रहीं व्रत पूजीं भाई, हर उदार यार अबकी के सवनवाँ में ॥ बा विचार० ॥
पंचामृत नहवाईं, चक्र चंदन चढ़ाईं, कुमकुम डार यार अबकी के सवनवाँ में ॥ बा विचार० ॥
करी अर्पण सुहाईं, ताम्र अच्छत गनाईं, पूर पार यार अबकी के सवनवाँ में ॥ बा विचार० ॥
मंजु मृदु मन भाईं, बेलपाती लेइ आईं, खुद उतार यार अबकी के सवनवाँ में ॥ बा विचार० ॥
फूल कमल के मँगाईं, गुच्छ गज़रा बनाईं, हो सिंगार यार अबकी के सवनवाँ में ॥ बा बिचार०॥
धूप धूम गमकाईं, करीं आरती अघाई, दीप बार

यार अबकी के सवनवाँ में ॥ बा विचार० ॥
बहु व्यंजन बनाई, फलफूल जौन पाई, धरी
थार यार अबकी के सवनवाँ में ॥ बा विचार० ॥
पान लायची दिखाई, पुनि प्रसाद बरताई, लगी
तार यार अबकी के सवनवाँ में ॥ बा विचार० ॥
शंभु गुण गण गाई, सत्यनारायण ध्याई, होई पार
यार अबकी के सवनवाँ में ॥ बा विचार० ॥१०६॥

❀ कजरी ❀

आज ऐसी मन आवतीं सुनो री सजनी ॥
अतिशय जो जिय भावतीं सो कहि के सुनावतीं ॥
आज० ॥ सब सखिन बुलाय अस मंत्र ठहराय,
देव नदी न्हाय जावतीं सुनोरी सजनी ॥ आज० ॥
करि गंगा असनान पूत वस्त्र परिधान, शिव स्थान
जान चावतीं सुनो री सजनी ॥ आज० ॥
शुभि डासन डसाय दृढ़ आसन लगाय, सचुपाय
शंभु ध्यावतीं सुनो री सजनी ॥ आज० ॥ नीके
नीर नहवाय गंध पुष्पहु चढ़ाय, धूप दीप त्यों

जरावतीं सुनो री सजनी ॥ आज० ॥ बहु व्यंजन बनाय ऋतु फलहू मँगाय, भोग विधि सों लगावतीं सुनो री सजनी ॥ आज० ॥ तामबूल पुनि लाय लौंग इलायची नाय मुख शुद्धि हू करावतीं सुनो री सजनी ॥ आज० ॥ हर कीरतिं सप्रीत युक्त आलिन सप्रीत, उमगाय गीत गावतीं सुनो री सजनी ॥ आज० ॥ करि दंडवत प्रणाम 'चन्द्रशेखर' सुनाम, लेत धाम स्व सिधावतीं सुनो री सजनी ॥ आज० ॥ १०७ ॥

❀ कजरी ❀

बिना राम काम आय हैं तुम्हारे कोउना।
सुत और सुता वाम अन्य जे सगे तमाम ॥ विना० ॥
सब दिन की यही शर्त सिद्ध मुनि हूँ समर्थ।
अर्थ के बगैर होत हैं हमारे कोउ ना ॥ विना० ॥
सृष्टि कायदा यही है सभी जानते सही है।
गही ममता को तबहूँ निवारे कोऊ ना ॥ विना० ॥
राम दीन हित कारी निगमागम पुकारी।

उपकारी अस आजु लौं निहारे कोऊना॥ विना० ॥
जासु गति अन्य नाहीं ऐसे अधमन काहीं ।
धरि वाहीं बहु अब लौं उबारे कोऊ ना॥ विना० ॥
विश्व विरद है जासु आरती हरन आशु ।
तासु विन बात बिगरी सुधारे कोऊ ना॥ विना० ॥
भव सरित ते धाय 'चन्द्रशेखर' त्यों आय ।
बहिराय बेगि करि हैं किनारे कोऊ ना॥विना०॥१०८॥

❁ कजरी ❁

ऐसे विप्र वर भाल में भभूत चहिये ना ।
होय बक्षस्थल विशाल, युक्त रुद्र अक्ष माल ।
कंध माहिं शुभ्र तीन यज्ञ सूत चहिये ना ॥ऐसे० ॥
कांख मध्य मृग चर्म, एक हांथ दर्भ नर्म ।
दूजो त्यों पलास दिव्य दण्ड पूत चहिये ना॥ऐसे० ॥
कटि मौंजि मेखला हो, धर्म बृत्ति निश्चला हो ।
देह मात्र नाहिं हृदयहु पूत चहिये ना ॥ ऐसे० ॥
अष्ट प्रहराभिराम 'चन्द्रशेखर' सुनाम ।
लेत प्रेम सो अकाम औ अकूत चहिये ना॥ ऐसे० ॥

❋ कजरी ❋

हर नाम की हमेश, लौ लगाओ बलमू।
जानि हित परिणाम, सह प्रेम वसु याम ॥ हर० ॥
रहें जो सदैव साथ, है सवार सब माथ।
हा न हाँथ काम आदि के ठगाओ बलमू ॥ हर० ॥
करि जनम करोर, जेते लीन्हें हैं बटोर।
द्रुत घोर दल दुरित भगाओ बलमू ॥ हर० ॥
दाम कौड़िहु लगैन, होय श्रमहु तुम्हैं न।
सुख दैन शुभ सुकृत जगाओ बलमू ॥ हर० ॥
कभूँ छूटि जो न सके, लोग देखि हो भौचके।
प्रीति पक्के रंग मन को रंगाओ बलमू ॥ हर० ॥
पड़े आपाति अनेक बढ़ि एक ते हु एक।
ध्रुव ते न नेक निज को डगाओ बलमू ॥ हर० ॥
शंभु कीरति सप्रीत, 'चन्द्रशेखर' पुनीत।
तजि भूलि अन्य गीत को न गाओ बलमू ॥ हर० ॥

❋ कजरी ❋

नेह शम्भु पद कंज में लगाए रहना।

पाय साधन की गेह, देव दुर्लभ सुदेह ॥ नेह० ॥
जग की जिती पसार, सब जानि कै असार ।
यार बिषयों से चित को हटाए रहना ॥ नेह० ॥
काम क्रोध खल क्रूर, करि देहिं मति कूर ।
दूर दूर कहि इन को भगाए रहना ॥ नेह० ॥
सत संग सुख खानि, तासु महिमा महानि ।
जानि तेहि प्रति प्रीति को दृढ़ाए रहना ॥ नेह० ॥
गाय हर गुण गान 'चन्द्रशेखर' सुजान ।
आन तान बीच विरति बढ़ाए रहना ॥नेह०॥१११॥

❋ कजरी ❋

मन भावे मोरे काशी की नगरिया ना ।
रहि रहि सुधि आवे, नहिं तनिक भुलावे ॥मन०॥
कीन्ह जग महँ आय, अघी तारण उपाय ।
सो सुहाय रही गंग की लहरिया ना ॥ मन० ॥
जन बृन्द प्रतिपाल, दुःख द्वन्द सब टाल ।
भैरो काल करैं पुरी रखवरिया ना ॥ मन० ॥
त्यहि रहे भल भ्राज, ढुँढिराज महाराज ।

काज साजत न लागै जिन्हैं बेरिया ना ॥ मन० ॥
बाँकी झाँकी दै बीरेश, करैं कृत कृत हमेश ।
स्वयं आप ही गणेश जहँ पुजरिया ना ॥ मन० ॥
तिहुं लोक मैं बखानी, अन्नपूरना भवानी ।
महारानी लेत सबकी खबरिया ना ॥ मन० ॥
'चन्द्रशेखर' अनाथ, के हैं नाथ विश्वनाथ ।
तहँ बैठे साथ लीन्हे सहकरिया ना ॥मन०॥११२॥

❀ कजरी ❀

हरसों हेत ना करो तू क्यों अनारी मनवाँ ।
कहते आज काल परसों, द्योस बीत गए बरसों ॥हर०॥
जिन्ने दीन करि दाया, तोसिं कंचन सी काया ।
परि माया मांझ तिनको बिसारी मनवाँ ॥हरसों०॥
अरि बृन्द क्रोध काम, आदि को तु सूबु शाम ।
में ही क्यों न उर ग्राम ते निसारी मनवाँ ॥हरसों०॥
पाय जन धन धाम, तिनमैं होय रत राम ।
बात हा तमाम तुमने बिगारी मनवाँ ॥हरसों०॥
होते हुए भी खबर, मौत शर पैहै जबर ।

क्यों गर्व करै तबहूँ गँवारी मनवाँ ॥ हरसों० ॥
काम आवे नाहिं कोई, सोचिओ समझले सोई ।
बाद भावे जोई करहि बिचारी मनवाँ ॥हरसों०॥
त्रय ताप के हरन्न, 'चन्द्रशेखर' चरन्न ।
हो शरन्न तासु सब सो सुधारी मनवाँ ॥हरसों०॥ १ १ २॥

❋ कजरी ❋

हियसे अपने हर बुराइ को हटाय दिया जाय ॥
करते बुद्धि को बिनाशु, रहके जो सदैव पासु ।
आशु क्यों न छयो रिपुको छटाय दिया जाय ॥हियसे०
करके प्रेम का प्रसार, बृद्धि गत करि प्यार ।
यार क्यों न द्वेष कलह घटाय दिया जाय॥ हियसे०
दुष्ट द्वैतता दुराव, बृत्ति एकता बढ़ाव ।
भले भाव ते स्वउर को भटाय दिया जाय ॥ हियसे०
होय मोह भ्रम भंग, चढ़े नेह नीक रंग ।
संत संग माहिं स्वमति सटाय दिया जाय ॥ हियसे०
जासु कीन्हे ते बिनाश, छूटि जाय भव त्रास ।
बेगि बासना कुतरु को कटाय दिया जाय ॥ हियसे०

फल चारि दिब्यदेन, 'चन्द्रशेखर' सुखेन।
लेन नाम शंभु जीह को रटाय दिया जाय॥हि०॥११४

❀ कजरी ❀

बात सारी यार मेरे मन की मन में रह गई।
कैसे जाने नहिं जात, घोस जात जे सिरात॥ बात०
काज कुल बिगारने की, रोज कल पै टारने की।
अब तलक भी शोक मेरी, लत बुरी न यह गई॥ बात०
कारन् से इसी के मात्र, होसके न कोई पात्र।
उम्र ऐसे वैसेही में ए, तमाम बह गई॥ बात०॥
करने को था वो वो कर्म, श्रेय युक्त जासु मर्म।
शर्म आज लौं न सिर्फ, शांत बृत्ति गह गई॥ बात०
करनी थी त्यों ईश भक्ति, सह श्रेष्ठ अनुरक्ति।
जीह सों न सीधी किंतु, नामावलि कह गई॥ बात०
ज्ञानवान बनने को था, मोहमान हनने को था।
अब लौं तो न हाय काहू की रे कार सह गई॥ बात०
शेष आश एक भारी, चन्द्रशेखर तिहारी।
अन्य आई हा हमारे हांथ वारी अह गई॥ ११५॥

❀ लावनी ❀

भजन बिन होगी हैरानी, कान कर लेना यह बानी।
दो०—भजन करे भवसे तरे, परे नहीं जग कूप।
भजन बिना नहिं निस्तरे, होय ज्ञानि जन भूप॥
भजन भल भुक्ति मुक्ति खानी॥ कान कर लेना०॥
दो०—भजन भरोसे बैठके, जंगल मंगल होय।
भजन रहित रहि स्वर्गहू, सुख न लहै कछु कोय॥
भजन गति अद्भुत अनुमानी॥ कान कर लेना०॥
दो०—भजन करत नित भाव सों, श्वपच शुद्ध बपु होय।
भजनहीन द्विजवर्यहू, शत श्वपाक सम सोय॥
भजन कृत अघ अशेष हानी॥ कान कर लेना०॥
दो०—रोग शोक दुख दूर हित, जो कर भजन सकाम।
लहत सद्य विनु श्रमहिं सो, सुत दारा धन धाम॥
भजन बर अभिमत वरदानी॥ कान कर लेना०॥
दो०-अहह धन्य जे सुकृति जन, करत भजन निष्काम।
प्रभु सरोज पद भृंग इव, रहत लुब्ध वसु याम॥
शिरसि प्रणवों सनेह सानी॥ कान कर लेना०॥

दो०-शशिशेखर को भजन की, महिमा सकहिं बखान।
कलि कराल साधन अपर॥ सुलभ सबहिं नहिं आन॥
भजन की शरण गहो प्रानी॥ कान कर लेना० ॥११६॥

❀ लावनी ❀

अरे मन क्यों नहिं तू बोले, सदा हर हर बम बम भोले।
दो०-भरमत योनि अनेक लखि, विकल दया हर कीन।
मुक्ति द्वार दुर्लभ अमर, देह मनुज तोहि दीन।
अजहुँ जो नहिं हिय हग खोले॥ सदा हर हर० ॥
दो०-तौ बिगरे बहु जन्म पै, बनी बात जो आय।
ताते विहित स्वकर्म नित, करि सप्रेम चित लाय॥
अर्पि हर अंतर मल धोले॥ सदा हर हर० ॥
दो०-हरिजन हरजन विज्ञजन,बसहिं जहाँ तेहि ठाँव।
जाय जानि परतत्व पुनि, करि सेवा परि पाँव॥
पाय उर भक्ति बीज बोले॥ सदा हर हर० ॥
दो०-अर्चन बंदन दास्य युत, सेवन सुमिरन जोय।
आत्म निवेदन आदि लै, बनहि करहि शुचि सोय॥
कामना कृत नहिं मति डोले॥ सदा हर हर० ॥

दो०—तेहि प्रसाद बर बोध लहि, समदरशी तिमि होय।
हर कहँ हर ओरहि लखहि, द्वैत भाव सब खोय॥
बार यक आनँद मय होले॥ सदा हर हर० ॥
दो०—यहि विधि बीतहि बयस जो, शशिशेखर धनि तोर।
परम धाम पहुँचत सुतव, छुवहिं न कोऊ छोर॥
घारने परैं न फिर चोले॥ सदा हर हर बम०॥११७॥

❋ लावनी ❋

श्रीशिवशरणेश्वर नाथ हमारे स्वामी।
तव चरण कमल युग अमल सतत प्रणमामी॥
धनि शुभ संवत् धनि मास धन्य तिथि वारे।
घटि धन्य धन्य पल जा छिन देव पधारे॥
शोकाकुल सुकुल कुटुम्ब देखि अति सारे।
करि दया दृष्टि ततकाल दुःख सब टारे॥
प्रणतारति भंजन हौ तुम अन्तरयामी।
तव चरण कमल युग अमल सतत प्रणमामी॥ तव०
मझधार आनि यह पड़ी जर्जरी नैया।
है रहित डाँड़ पतवार सुचारु खेवैया॥

झकझोर रही बहि घोर पवन पुरवैया।
तुम बिनु एहि औसर दूसर कौन सहैया।
हे आशुतोष अबिलंब लेहु कर थामी ।। तव०।
तव आश्रित यह परिवार पुरारि प्रभो हे।
मन वच क्रम सब जन शरण तुम्हारि प्रभो हे।
यह गरज भरी लघु अरज हमारि प्रभो हे।
दृग कोर छोर दीजिये निहारि प्रभो हे।
जेहि होंय अकिंचन अविरल भक्त अकामी।। तव०।
अब दीनबंधु सुख सिंधु कृपा यह कीजै।
कामादिक सकल विकार प्रति क्षण छीजै।
अनपावनि आपनि भक्ति दयामय दीजै।
पद कंज मधुप बनि मंजु मधुर रस पीजै।
"शशि शेखर" स्वीकृत करिय शरण वृषगामी ११८(१)

(१) मृत पुत्र शिवशरण (जिनके मरने के प्राय: २ वर्ष पहिले ही भजन नं० ३८ बना था जिसमें–कोई मरे जरे या–का पद आया है एवं जिनके मरने पर मुख पृष्ठ पर छपी हुई–जाग्रत कहै को-वाली कवित्त आश्वासन स्वरूप प्राप्त हुई थी-तथा च-जिनकी धर्म पत्नी का नाम–सुन्दरी भजन नं० १४ में आया है) के नाम से उनकी धर्म पत्नी के अवलंबनार्थ स्वगृह में ही जिनकी स्थापना हुई है-

❋ दिन चर्या ❋

प्रातकाल उठि श्रेष्ठ जनों के चरण शीश नाना चहिये। शौचादिक से हो निवृत्त श्री सुरसरि में न्हाना चहिये॥ अर्घ्य दान दै सूर्य देव को जप में चित लाना चहिये। सो समाप्त करि सहोत्साह शिवआलय को जाना चहिये॥ यथा मिलित उपचार पूजि प्रभु निज गृहको आना चहिये। देव दीन्ह जो वस्तु अर्पि तेहि पुनि प्रसाद पाना चहिये॥ निरालस्य हो ईश आश करि उद्यम उलझाना चहिये। यथा प्राप्ति मेंही हमेश युत मोद तोष माना चहिये॥ पुनि प्रदोष समये अवस्य कछु काल प्रभुहि ध्याना चहिये। 'शशि-शेखर संतत सहर्ष हरके गुण गन गाना चहिये॥

❋ दोहा ❋

जो अक्षर पद भ्रष्ट अरु, हीन मातरा होय।
छमि समस्त स्वीकृत कृतिहिं, करिय देव मम सोय॥

मनसा वाचा कर्मणा, बुद्धि प्राकृतिक जोय।
किये कर्म सादर सबहिं, शिवहिं समर्पण सोय।

❋ हरिः ॐ तत् सत् ❋

श्री कान्यकुब्ज कुलोत्पन्न शुक्ल बंशी घशात्मज शुक्ल 'चन्द्रशेखर' विरचित श्रीत्रिलोचनेश्वर प्रसाद स्वरूप श्री शिवभजनमाला समाप्त ज्येष्ठ शुक्ल द बुध १९९४ विक्रम।

❋ इति ❋

—:❋❋❋❋❋:—

पं० श्रीलाल उपाध्याय द्वारा-श्रीविश्वेश्वर प्रेस, काशी में मुद्रित।

पूर्ण-

ब्रह्मानन्द भजनमाला।

लेखक-पं० श्रीलाल उपाध्याय।

आपको इस भजन माला में अकथनीय आनन्द प्राप्त होगा। शान्त रस में डूबे, मधुर शब्दों से भरे, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य मिश्रित, रोचक सरल, सुगम सुपाठ्य पद, भजन, ठुमरी, गजल, लावनी आदि पदों में वर्णित है। एक प्रति मँगाकर देखें। मूल्य- ॥=)

हर प्रकार की-

पुस्तकों के मिलने का पता-

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर

राजादरवाजा बनारस सिटी।